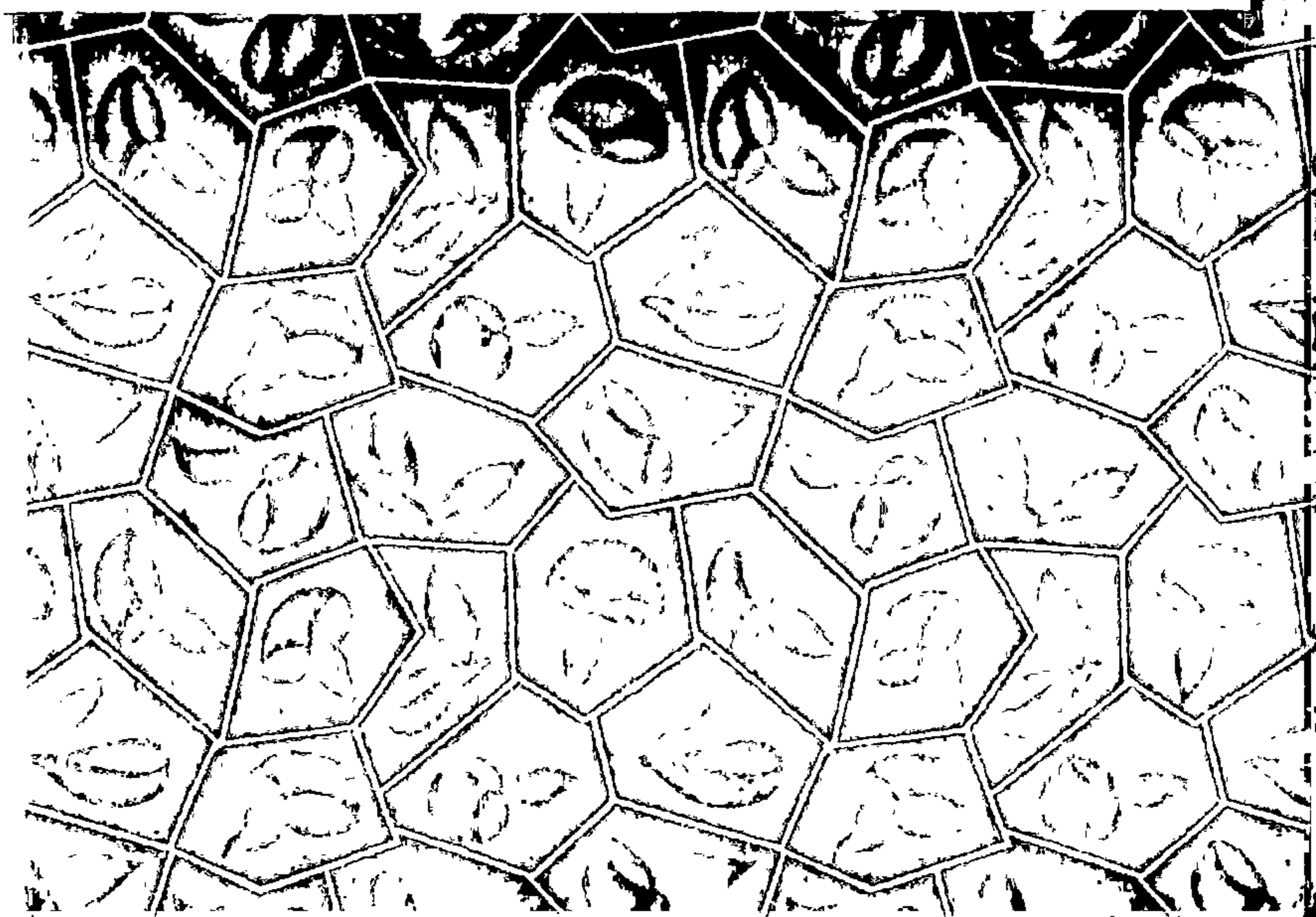
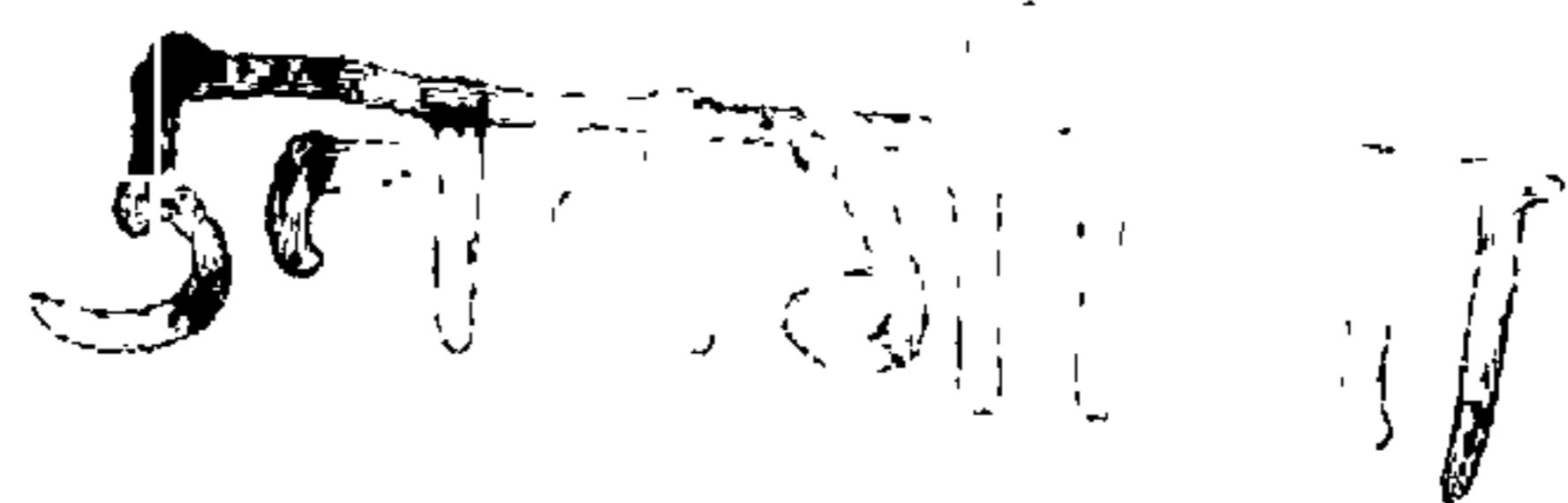
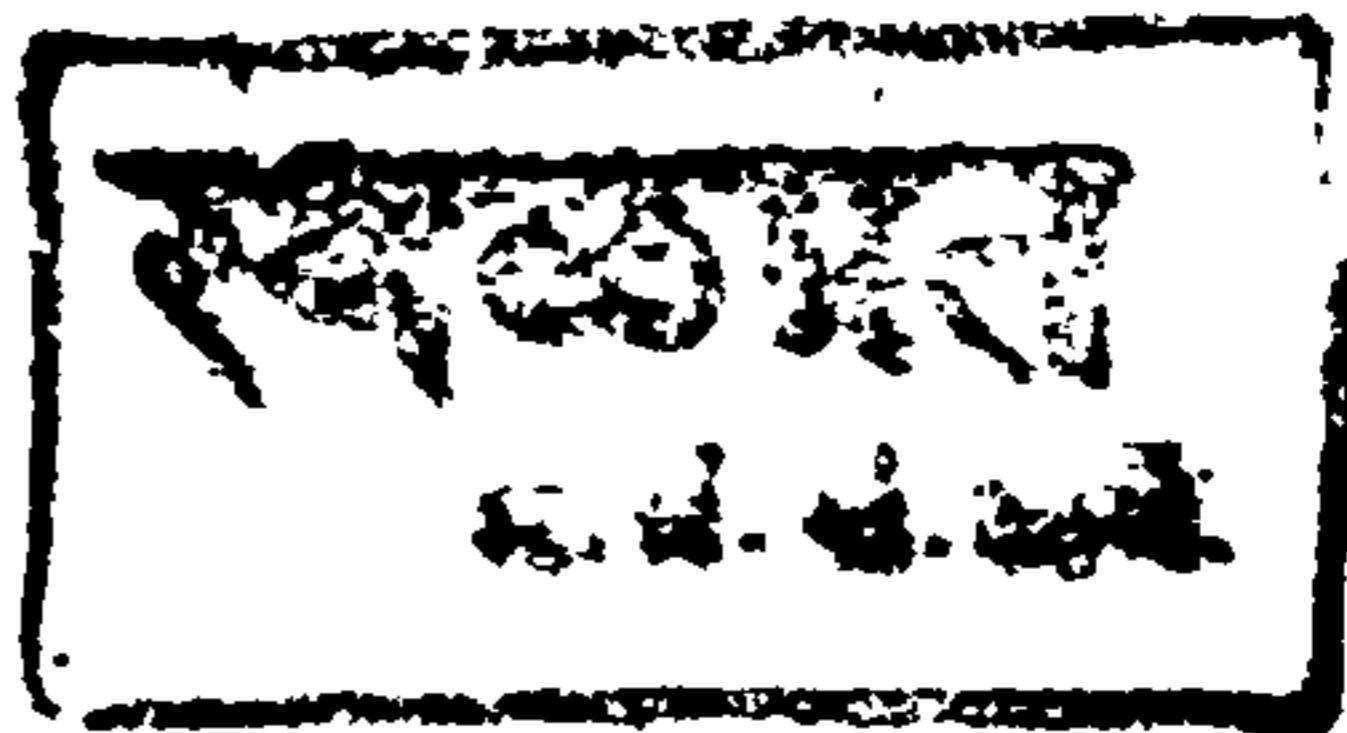


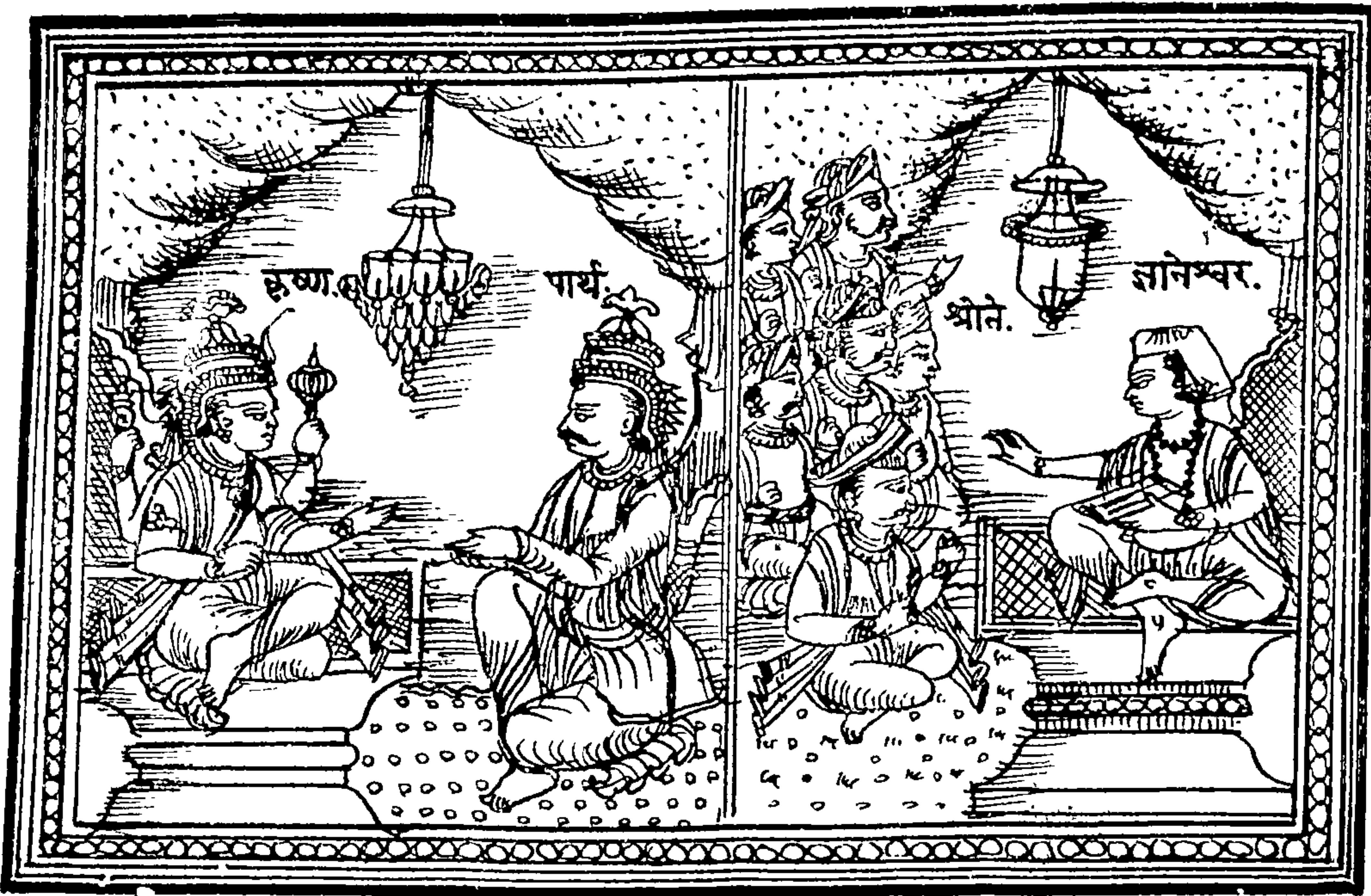
अदृश्य



F  
गोपी  
६३



अथश्रीलानेश्वरकृतोकास-  
हितउत्तरगीताप्राप्यते. ॥



श्रीगणेशायनमः ॥ श्रीसहस्रवेदायनमः ॥ ३५ नमो मणि  
वतेवासुदेवाय ॥ ३६ नमो जीगणेशवरा ॥ उमाशंकरकुमा-  
रा ॥ तारावधामवसागरा ॥ तुंचिएकु ॥ १ ॥ तारकब्रह्माचावि-  
वरु ॥ तंपदतत्पदशोधनकरु ॥ असिपदाचानिर्धारु ॥ तुझेनि-  
ची ॥ २ ॥ अज्ञानतिभिरसांजवेळे ॥ ज्ञानशलाकाबुद्धीचेडो  
ळे ॥ उघडूनिसिहचिविषळे ॥ प्रकाशवरु ॥ ३ ॥ गुरुत्वेहोसी  
दिवता ॥ आगमनिगमाचियावाटा ॥ घड्दर्शनांचाचाह-  
टा ॥ दरविसीहेळा ॥ ४ ॥ आधारापासूनिसहस्रदृष्टव-  
री ॥ पूर्वमार्गाचीकुसरी ॥ पन्नासमातूकांचीप्रावरी ॥ सु-  
ष्टिरनेची ॥ ५ ॥ सातांहीचक्रांचाजपु ॥ ध्यानवर्णदृष्टिस-  
कल्पु ॥ पूजातर्पणनिवेदनकल्पु ॥ मंभराजसहज ॥ ६ ॥

श्रिमेचेसानचक्रवाट ॥ ब्रिकूटश्रीहतगोल्हाट ॥ औटपीठ-  
 भमरसुंफाचैनन्यनीट ॥ ब्रह्मरंभ्रुरुसुरवे ॥ ७ ॥ ऐसाचैद  
 विद्यांचारोंसावी ॥ अथउर्ध्वमध्यसावेवी ॥ बाल्यअभ्यंत-  
 रींसक्तिशावीं ॥ वंदिलासिन् ॥ ८ ॥ जोकांभादि भंतींएकु  
 ॥ सणूनिबोलिजेविनायकु ॥ एकचिनवपर्यकु ॥ मायावी  
 जाला ॥ ९ ॥ शून्यापासूनिधरितां ॥ रवांजणियांआरवे-  
 आंरववाटवितां ॥ वाटलीसंसाराचीवार्ता ॥ सृष्टिक्रमे ॥  
 १० ॥ परतोनितोचिअंकुभाजिला ॥ अंकेअंकुनाहीसाज्ञा-  
 ला ॥ शून्याचाहीठावोसुशिला ॥ श्रह्मविदेकपार्टी ॥ ११ ॥ ऐ-  
 सासाधनकमसिद्धमुरवे ॥ तेंतूचिजीवशिवविशेरवे ॥ प्रयं-  
 चझडत्यासगरेवे ॥ असिपदसिद्धचो ॥ १२ ॥ शिवशक्ति

सन्निधार्ती ॥ एक एक मृणतांदोनी ॥ ओं काराची घटणी  
॥ कायसांगू ॥ १३ ॥ ब्रह्मबीजाङ्गालें चलण ॥ तेंचिओंकार  
अक्षरबलण ॥ दोंमिळणीचिंलक्षण ॥ अगोचरते ॥ १४ ॥  
मनाचेनिदेठे ॥ पवनाचेनिशेवते ॥ ईश्वराचेनिकर्ते ॥ ओता  
लेंकैसे ॥ १५ ॥ अकारउकारमकार ॥ तोचिब्रह्माविष्णुम  
हेश्वर ॥ कैसाभिगुणाचाजाकार ॥ विस्तारला ॥ १६ ॥ सो  
हंबीजाचेनिमार्ग ॥ परमात्म्याचेनियोगे ॥ एकाक्षरब्रह्मवे  
गे ॥ बोलिलेंशिवे ॥ १७ ॥ तंवदिलेंगणेशप्रचडे ॥ बुजयं  
थाचेंआहेकोडे ॥ तरीउत्तरगीतेचीटीकापाडे ॥ विस्तारिपा  
॥ १८ ॥ आगमनिगमाचेंमध्यन ॥ शास्त्राचेंअंतरजीवन ॥  
मारतइतिहासपुराण ॥ आसेकेले ॥ १९ ॥ अठरापर्वभाव

भारत ॥ त्याभ्यें सहावें प्रीष्म पर्वजेथ ॥ नरनारायणगु-  
 जतेथ ॥ बोलिलेदोषे ॥ २० ॥ तेगीता अठरा अध्यायों ॥ बो-  
 लिलेपुराणमावर्तीं ॥ धर्माधर्मउपनिषदसावेवीं ॥ वेदांतम-  
 र्थं ॥ २१ ॥ ऐसीजेसारवस्तुगीता ॥ तिथेचेंसारउत्तरगीता  
 ॥ करणेव्याससाभ्यर्थी ॥ कायवानू ॥ २२ ॥ रुक्षलियावे-  
 दशारुद्धांचियावाटा ॥ त्याभ्यासें केलियाचोरवटा ॥ जैसा  
 वृक्षाविरक्तारेफाटा ॥ पानेपुलेंफक्कांसी ॥ २३ ॥ ऐसीशा-  
 स्त्रेंनिर्मळें ॥ केलींव्यासेंप्रक्षाबळें ॥ जेबींपूर्णिमेसीपूर्णक  
 डें ॥ उगावेचंद्र ॥ २४ ॥ त्याभ्यासासीकेलेंनमन ॥ तेणेंदिघ-  
 लीअतुशाआपण ॥ तंवशारदेचेवरदान ॥ ओडंबरलें ॥ २५  
 ॥ तेशारदाकेसीदेविवली ॥ जेकांब्रह्मविद्येचीमाउली ॥ वेद

शारस्वेंगीतारहस्यबोलिली ॥ ज्ञानेंशर्तिं ॥ २६ ॥ जेकांब्रह्म  
विद्येचीकळा ॥ सभावीयेचाजिळाळा ॥ कैसीरुषुभ्नावे-  
ल्हाळा ॥ परमात्मस्थार्णि ॥ २७ ॥ जैसीसूर्याचीप्रभाशहु  
॥ सूर्यचिमिरवेयसिहु ॥ तेसाआत्मबोधाचाबोध ॥ जिये-  
चेती ॥ २८ ॥ आनंदाचियेसागरी ॥ क्रीडतसच्चिदानंदलहरी  
॥ सत्त्वगुणाचेमंदिरी ॥ रवेळजियेचा ॥ २९ ॥ ओंकाराची  
अर्धमातृका ॥ अस्तिपदप्रतिपादका ॥ तत्त्वज्ञानासीऐक्य  
वादका ॥ प्रतिपादकावेदांती ॥ ३० ॥ ऐसीप्रसन्नवदना ॥  
शारदाबोलिलीवचना ॥ चिन्तांधिरिसीप्रबंधरचना ॥ नितु  
कीसिहुनेईन ॥ ३१ ॥ काश्मीरपीठनाथकामांडारी ॥ श  
द्वरतेंसंगहिलीनानापरी ॥ याउनर्थपदार्थेचीपरीक्षा

करी ॥ रत्नपारशिवया ॥ ३२ ॥ इद्येचीमुक्ताजाहली ॥ स-  
 गमनादिब्रह्माचीबोली ॥ मूलिसरब्दमुहुरली ॥ प्रबंधर  
 चर्चने ॥ ३३ ॥ आद्यकाव्यकत्तवाल्मीक ॥ येणेवरदिव्यला  
 प्रकाशक ॥ वसिष्ठादिकृषिसंपर्क ॥ संतमहंतानमियेले  
 ॥ ३४ ॥ श्रीआदिनाथमीनगोरक्ष ॥ नाराजुनकनेरोअसं-  
 ख्य ॥ सिद्धसाधककरूनिमुरव्य ॥ श्रोतयांनमनमाझे ॥ ३५  
 ॥ आतांवदूश्रीगुरुनाथ ॥ जेणेमरुकीठेविलाहात ॥ सं  
 शयफे डूनिनिभांत ॥ केलेंमज ॥ ३६ ॥ जोसर्वकछांसंपू-  
 र्ण ॥ निराकारआकारलानारायण ॥ जोगुणातीतनिर्गु-  
 ण ॥ दयार्णव ॥ ३७ ॥ जयाचियेक्षपाहष्टी ॥ ज्ञालीस्त्रह-  
 येंसीमीली ॥ उपाधीकहींचीनुटी ॥ ऐसेंकेले ॥ ३८ ॥ निर्गु-

ग्रासीजरीवण्डिवें ॥ तरीसगुणलगोकरावें ॥ म्हणोनिजगे  
चिपायांपडावें ॥ हेंचिमलें ॥ ३९ ॥ यावरीश्रीनिवत्ति ॥ पूर्ण  
बोधाचीउन्नति ॥ जिरबूनिवासपाहती ॥ मजकडे ॥  
४० ॥ मगश्रीगुरुबोलिला ॥ उत्तरगीतेचाअथाधपहि  
ला ॥ म्लोकार्थवहिला ॥ बोलवेगी ॥ ४१ ॥ याश्रीगुरु  
चिपाबोला ॥ वरीसंतांचासावावोजाला ॥ तेणोबोधसमु  
द्दउल्हासला ॥ लहरीमरे ॥ ४२ ॥ आतांतुमचेनिप्रसादें ॥  
संरुतम्लोकाचींपदें ॥ मतिबळेंबोलेनआनंदें ॥ ज्ञानदे  
बोम्हणे ॥ ४३ ॥ परीसमर्तम्लोकार्थ ॥ जोबोलेनयथार्थ  
॥ तोझोंविषंधप्रसुत ॥ प्राकृतभाइका ॥ ४४ ॥ ॥ म्लो  
क ॥ ॥ अर्जुनउवाच ॥ ॥ यदेकंनिष्कलंशस्यव्योमाती

तंनिरंजनम् ॥ निर्मलं परमं दिव्यमप्यमेयमतुतम् ॥ १ ॥ १  
 टीका ॥ ॥ नरीनिष्कलएकब्रह्म ॥ पञ्चमूलांपेलीकडचेवसे  
 ॥ इंद्रियव्यापारधर्म ॥ नाहींतेथे ॥ ४५ ॥ जेथेप्रपञ्चाचाचम  
 छनाहीं ॥ स्वयं प्रकाशदिव्यतेजपाहीं ॥ प्रमेयातीत चोरव-  
 ही ॥ ब्रह्मबोलिजे ॥ ४६ ॥ जेथेशक्तिचक्राचाकलं कनसे  
 ॥ मृणूनिष्कलबोलिजे ऐसे ॥ जेथेजननाहींतं निरंजन  
 कैसे ॥ सांगावेंजी ॥ ४७ ॥ ॥ श्लोक ॥ ॥ अप्तव्येष  
 विषेधं विनाशोत्पत्तिवर्जितं ॥ कैवल्यं केवलं शांतं उद्गमत्यं  
 तनिर्मलम् ॥ २ ॥ ॥ टीका ॥ ॥ जेतर्कशा स्नासीनातुडे ॥  
 ऐसेंहानधडुडे ॥ उत्पत्तिसंहारावेगाळेकोडे ॥ तेंसांगावे-  
 जी ॥ ४८ ॥ मोलमापगण्डमूर्तींतेकेवल्य ॥ कल्पनार-

हितशांतके वच्छ ॥ परतलियाहुहि अनिर्मल ॥ ऐसें कां  
जे ॥ ४९ ॥ ॥ श्लोक ॥ ॥ कारणयोग निर्मल हेतु साधन  
वर्जित ॥ नीवाराभस्थितं मूढमंशानं ज्ञेयस्वरूपिणस् ॥  
३ ॥ टीका ॥ ॥ योगियाचेस्कृद के चेकारण ॥ जेधें पारु  
षलें हेतु साधन ॥ तेंडोल्लांधा लहनियां अंजन ॥ दारबद्वावें  
जी ॥ ५० ॥ राष्ट्र्याच्याकुसल्लाचें अग्र ॥ त्यावरीलजेस्कु  
मार ॥ जेधें अविद्येचें अकुर ॥ सुको निजाती ॥ ५१ ॥ प्र-  
णवाचें अवाकुजें अग्र ॥ सिहशहु मूढमउँ काराकर ॥  
जाणाणयाचें मूढस्याकसार ॥ जाणास्वरूप ॥ ५२ ॥ ज्ञा-  
नें करु निजापिजेतेशेय ॥ हें बोलणेन साहेजया ॥ अ-  
वेषलक्षणीं तया ॥ रूपकैसे ॥ ५३ ॥ ॥ श्लोक ॥ ॥ नि-

गुणं परमं गुह्यं भिन्ना भिन्न सभ्याम् ॥ तत्सणादेव सु-  
 च्छं ते विज्ञानं ब्रह्म हि केशव ॥ ४ ॥ ॥ टीका ॥ ॥ जेगुह्यं भि-  
 गुणा परते ॥ भिन्न शरीरि समत्वे ॥ जन्म मरणा पराशो-  
 ते ॥ क्षणमा अद्वधकरी ॥ ५४ ॥ ऐसे जेविशेषज्ञान ॥ सं-  
 सारापास्त्रूनिकरी सोडबण ॥ केशवासावधानपणे ॥ मह-  
 णे सांगा बेजी ॥ ५५ ॥ ॥ श्लोक ॥ श्री भगवानुषाच ॥  
 साद्युपार्थमहाबाहो ब्रह्मानसिपांडव ॥ यन्मां पृच्छ-  
 सि तत्सार्थमर्शेषं प्रवद्यस्य ह ॥ ५ ॥ ॥ टीका ॥ ॥ तरी आ-  
 जानु बाहो साद्युपार्थी ॥ मन ब्रह्मित्रैवीं प्रवन्नाचियामायां  
 ॥ मग्नु शिलीयान तत्सार्थी ॥ सांगितलें फावेल ॥ ५६ ॥  
 श्लोक ॥ ॥ आत्ममंत्रस्य हं सर्वस्य परस्परसमाश्रयः ॥

योगेन्द्रियातकास्थानां भावनाचैव मेव च ॥ ६ ॥ रीका ॥ ॥  
तरोभात्मसिद्धसोहं मंत्रे इसा ॥ परस्परें समरस्केसा ॥  
एक एकात्में गिल्लितां सावावो इसा ॥ काम्याचियाभाव-  
दी ॥ ५७ ॥ संबादस्फरवाचीगोडी ॥ एक सूत्र एकात्में आहो  
॥ ऐसी भावना उभावु निशुटी ॥ नांदत असतो ॥ ५८ ॥ सर्व  
मंत्रां चातोराज ॥ मृणूनि मंत्रराजसहज ॥ सातकां च  
जीवनकाज ॥ बीजसूपकीं ॥ ५९ ॥ ॥ श्लोक ॥ ॥ श  
रीराणा मजस्थाहु हंसलं परिहृथ्यते ॥ सोहं कृत्वा इक्षरं  
चैव कूलस्थमचलं ध्रुवम् ॥ ७ ॥ ॥ रीका ॥ ॥ तरोभात्म  
जीवां चेशरीरों ॥ परमात्महंसपदचीयोरी ॥ अरवदु अ  
सतसेगोचरीं ॥ परीनेणती अज्ञान ॥ ६० ॥ सोहं कारज

बोलिजेते ॥ तें अनक्षर व्यें वर्तते ॥ कूटस्थाणि अच्छ-  
 तयाते ॥ वेदां तव संगती ॥ ६१ ॥ सृष्टि रचने पुढें सकार  
 ॥ मागें रहे तो हकार ॥ संहार है तू वरी पुढें हकार ॥ सका-  
 र मागे ॥ ६२ ॥ विकूटीं वास मृणू निकूटस्थू ॥ तो चिबत्सांडीं चा-  
 गृहस्थू ॥ परमात्मा लो संततु ॥ याचें चिनाम ॥ ६३ ॥ तरी हे-  
 सा आणि सोहीं ॥ समर सकरू नियां पाहीं ॥ यापरमार्था-  
 चीउही पुही ॥ करावी चिंगा ॥ ६४ ॥ अजपेचें जपबोज ॥  
 सृष्टम अँकारा सरनिज ॥ क्षरा क्षरनाद बिंदु सहज ॥ अ-  
 निरूप ॥ ६५ ॥ क्षर लोश क्षिपु क्षमयं कु ॥ बिंदु सृष्टपक्षावं-  
 तु ॥ क्षुला कारप्रसवतु ॥ चतुष्यह काराचेनी ॥ ६६ ॥ सृ-  
 ष्टादिशेदिलासकार ॥ मृणू निबोलिजेसरु ॥ आतां बो-

स्त्रिजेलुभक्तरु ॥ कृतस्थजो ॥ ६७ ॥ तरीस्तूर्यस्तृपहकारु ।  
जोअनादिस्तृपभक्तरु ॥ क्षराचेयोगंव्यापारु ॥ तथाचाचा-  
ले ॥ ६८ ॥ संहाराचेकामत्याचें ॥ नांवतरीपरमात्मयाचें ॥  
पोगभोटर्पीर्हिचे ॥ सत्ताकस्त्री ॥ ६९ ॥ ऐसाउभयसंधी  
चाविवरु ॥ तोपद्येगोळउँकारु ॥ महणूनितमपुरुष  
साचारु ॥ निजानंदभरितु ॥ ७० ॥ त्वंपदतत्पदभसिपदये-  
चिप्रभाणें ॥ सिद्धसंकेतुवेदांतीयेणें ॥ वेदांतसिद्धांताचिये  
रुणें ॥ अनुभवावेगा ॥ ७१ ॥ ॥ श्लोक ॥ ॥ पिंडेसुक्ताः  
पदेसुक्तास्तपेसुक्ताःषडानने ॥ रूपातीताःस्तयंसुक्तास्तेसुक्ता  
नाभ्रसंशयः ॥ ८ ॥ ॥ टीका ॥ ॥ पार्थाहामनुभवूजया-  
फावे ॥ तोबैसेब्रत्यपदाचियाराणिवे ॥ आत्मविदुस्तमावें ॥ ने-

योबंधन ॥ ७२ ॥ स्वप्नानिपिंडीसुक्लपदीसुक्ल ॥ दोहोचंशान  
 तेथेंहिसुक्ल ॥ दोहोचापुरल्लासंकेत ॥ तोसुक्लनिःसंशय ॥ ७३  
 ॥ आणिमीसुक्लहेकाहो ॥ जयासीआठवचिनाहो ॥ रूपाती  
 तस्वयेंपाहो ॥ निःसंशयसुक्ल ॥ ७४ ॥ ऐसेंगोरीचेनिवहुमें  
 ॥ स्वामीसीसांगितलेंलोमें ॥ त्वंतत्त्वस्तिपदप्रभें ॥ निर्णयो  
 केला ॥ ७५ ॥ तैसेंचिपंधराव्याजध्यार्थी ॥ अर्जुनासांगित-  
 लेंतुजपाहो ॥ क्षराक्षरउत्तमपुरुषही ॥ निर्धारिले ॥ ७६ ॥  
 ऐसाउकलुवाकलुगुरुमुरवें ॥ जेनकरितीतीसूरवें ॥ इकवि-  
 लींशब्दाचेचिसुरवें ॥ संशयात्मकें ॥ ७७ ॥ याबोलाचेअनु-  
 चिती ॥ उपसाहीजोजीमहंती ॥ मास्तीबोलतीसुक्ली ॥ अ-  
 रुषमसे ॥ ७८ ॥ ॥ श्लोक ॥ ॥ लद्विद्वानक्षरं प्राप्यत्यज-

न्मरणजन्मनी॥ स्थिरबुद्धिनसंमूढाब्रह्मविद्वत्पिस्थितः  
॥९॥ ॥टीका ॥ ॥ विद्वज्जन्मजेश्वानिधेआपार ॥ ज्यांसी  
प्राप्तहेअक्षर ॥ तेउतरलेगापार ॥ जन्ममरणाचा ॥ ७९॥  
ऐसेहृदबुद्धीआधिले ॥ तेचिब्रह्मविद्वत्ले ॥ स्वयंबोधेऽधा-  
ले ॥ तेब्रह्मचिपुत्रें ॥ ८०॥ ॥ म्लोक ॥ ॥ काकीमुरवंकका  
रांनमकारश्वेतनाधृतिः ॥ ककारस्तभलुष्टेतकोर्धः संप्रति  
पद्यते ॥ १०॥ ॥ टीका ॥ ॥ तरिकाम्लणिजेपुरुषवाचु ॥  
कीतेस्त्रीशब्दसाचु ॥ दोहींचीसंधिनोमुखाभासु ॥ नभ  
जैसेंअबकाशोंसी ॥ ८१॥ पुरुषशोकिलाशक्ति ॥ तथाची  
नांवककारसमाप्ति ॥ मगतोउगल्लिलियानाहींव्यक्ती ॥ प  
हुतीची ॥ ८२॥ एकएकावरीलोक्ते ॥ एकगिल्ले एकउगल्ले ॥

जैसेगंगेयसुनेचेनिकल्लोळे ॥ संगमयोगे ॥ ८३ ॥ देवशक्ति  
 चेतनारूप ॥ निधेचेनिहेस्तसीचेंरोप ॥ पुरुषतोउदाससंक्षेप  
 ॥ बोलियेलाभसे ॥ ८४ ॥ पुरुषजैनिकरेंआटे ॥ तैशक्तीचा  
 गावोउरेलकोठे ॥ दोहींचीत्समाप्तिरेटेंबोटे ॥ त्यातेकायम्ह-  
 णावे ॥ ८५ ॥ हाअर्थुबोलतांसाकडे ॥ वाचेपनाकुवाडे ॥ हेंजा  
 वेंधडफुडे ॥ गुरुसेवने ॥ ८६ ॥ जोकोवेदांतींप्रतिपाद्यु ॥  
 आणिसिद्धांतींसिद्धु ॥ जेथेंपुरेसंबंधु ॥ काळाचार्ये ॥ ८७ ॥  
 तेंअनिर्बन्धब्रह्म ॥ जेगुणातीतपरमधाम ॥ तेथेंशब्दुही  
 निःसीम ॥ हारपोनिजाये ॥ ८८ ॥ ॥ श्लोक ॥ ॥ यावत्प  
 श्येतरवगाकारंतदाकारंविचिंतयेत् ॥ रवमध्येचप्रतिष्ठंतरवं  
 चञ्चलसनातनं ॥ ९९ ॥ ॥ टीका ॥ ॥ अर्जुनाभात्माकैसा

जाणणें ॥ आकाशासारिरवादेरवणें ॥ आकाशहोडूनिनि  
तणें ॥ अवकाशब्रह्म ॥ ९९ ॥ आकाशहोडूनिअवकाशी  
निधावें ॥ तैस्वतंभ्रह्मजाणावें ॥ आत्मयातेनभासारिरवे  
करावें ॥ निवांतपणें ॥ १० ॥ शून्यशून्यमांजिलें ॥ त्याचेनाही  
पणरूपयोजिलें ॥ निःशून्येनिरंजनसाधलें ॥ अवधियांस-  
हित ॥ ११ ॥ ॥ श्लोक ॥ ॥ रवमध्येकुरुत्यानमात्ममध्ये  
चरवंकुरु ॥ आत्मानंरवमध्येल्लानकिंचिदपिचिंतयेत् ॥ १२  
॥ टीका ॥ ॥ आकाशामध्येआत्मादेरवणें ॥ आत्मयामध्ये  
आकाशपाहणें ॥ आत्माआकाशवत्करणें ॥ मगचिंता-  
वेनलगेकाहीं ॥ १३ ॥ शब्दनिःशब्दजेयेमावद्वले ॥ मनफ-  
वनहारपले ॥ मायाब्रह्मसमरसलें ॥ जियेसंधि ॥ १४ ॥ ते

संधिजयाकल्ली ॥ तेथेंतुर्वेचीसीमापुरली ॥ चतुर्थशून्येण  
 डीदिघली ॥ उच्चनीसी ॥ ९४ ॥ ऐसेसहुरुपुरवेंजेबुझावले  
 ॥ तेचिसीम्हणावेवहिले ॥ तंबजुनाचमनउचंबल्ले ॥ वो  
 संडेभान्दु ॥ ९५ ॥ ॥ श्लोक ॥ ॥ बहिव्येमस्थितंनित्यं  
 नासाग्रेचव्यवस्थितम् ॥ निर्मलंतद्विजानीयात्षड्डर्मिरहि  
 तंशिवम् ॥ ९३ ॥ ॥ टीका ॥ ॥ तरीयोगियांचंस्थितिल-  
 क्षणकेसं ॥ शब्दगुणरहितबाहिजीआकाशे ॥ नासिका  
 चेअग्रीफूमध्यदेरवे ॥ सुषुम्भालोर्पो ॥ ९६ ॥ तेंनिर्मलनि  
 श्वलनित्यस्थिता ॥ शुद्धजानेंजाणतीतत्त्वतां ॥ साहीऊ-  
 मर्विर्जितां ॥ शांतिशिवपद ॥ ९७ ॥ शोकभोहकधापिपा  
 सा ॥ जरामरणऐसा ॥ साहीऊमर्चारसा ॥ मावल्लतेथे

॥९८॥ ॥श्लोक॥ ॥प्रभाशून्यंमनःशून्यंबुद्धिशून्यंनि-  
रामयम्॥ सर्वशून्यनिराभासः समाधिस्थस्थलक्षण-  
म्॥१४॥ ॥टीका॥ ॥आतांशून्याचीस्थिति॥ ऐक  
गास्कमद्वापती॥ जेद्यूनिजेहोचउत्पत्ति॥ तेबीजशून्य  
॥१९॥ परेजागृतिद्यालिघासर्वदेरवणे॥ त्याचिनांष-  
भास्त्रहणणे॥ मनसंकल्पविकल्पस्त्रमे॥ बोलिधेलें॥१००  
॥बुद्धिहारपेतेस्त्रुसि॥ चौथीतुर्द्वचीस्थिती॥ हेचिशू-  
न्यप्रतीति॥ जाणाचीगा॥ १॥ अस्याविष्णुरुद्रइवर  
॥ हेचारीअभिमानीदेहोंनिरंतर॥ वाच्यासहितचतुर॥  
एकार्धधेती॥ २॥ जागृतिस्त्रनिद्राहरपली॥ तेजाहीं  
यणेंशून्यस्याली॥ यापरीशून्याचीस्थितीजाणवली॥

तत्सज्जानियांसी॥३॥ चौथीतुर्याबोलिजे॥ तेहोब्रह्माकरु  
 कीजे॥ तेंचौथेशून्यजाणिजे॥ योगेश्वरीं॥४॥ सगापांच-  
 वीजेदशा॥ तेअनिर्वाच्यवीरेशा॥ परीसिद्धांतियांचाअनु-  
 भवेसा॥ जेउचनीम्हणती॥५॥ शुरुकृपालवलहें॥ इ-  
 श्वराचेनिअनुग्रहें॥ स्थिरबुद्धिअवरम्पातहोय॥ समाधिल-  
 क्षणहें॥६॥ ॥श्लोक॥ ॥उद्घर्षशून्यमध्यशून्यमधःशून्य  
 निरामयस्॥ विशून्यंयोविजानातिसोपिशुच्येतबंधनात्॥१५  
 रीका॥ ॥उद्घर्षशून्यतेंसुषुप्ति॥ मध्यशून्यहोयस्वप्नस्थिति  
 ॥अधःशून्यजागृति॥ निरामयतुर्या॥७॥ परीशरीरींमा-  
 र्गदिसेविशून्याचा॥ तंबमळुनफितेअविद्येचा॥ चौथेनिशू-  
 न्येंमवबंधाचा॥ ठावोचिफिट॥८॥ प्राणआणभपान॥

दोहीमावल्लीतेंविशृन्य ॥ चौथेंसर्वव्यापकग्रहन ॥ तेंसो-  
क्षपद ॥ ९ ॥ जैथेनिश्चयेसोपार्थ ॥ बाधुचिनहोसर्वथा ॥ तें  
थेंसोक्षाचोहीआस्था ॥ कल्पीकवण ॥ १० ॥ ॥ श्लोक ॥ ॥

अमानंशब्दरहितंस्वरच्चंजनवर्जितम् ॥ विदुनादकलातोतं  
यस्तंषेदसषेदवित् ॥ १६ ॥ ॥ रीका ॥ ॥ अकारउकारम्-  
कार ॥ अर्धमानाधनितओकार ॥ उदानअनुदानस्वरित-  
स्वर ॥ व्यंजनओकारधनिमान ॥ ११ ॥ हाआकारजैथेनिमा-  
ला ॥ तेथेंसहजमानांचागवेषुचिला ॥ ऐसाप्रकारझाला ॥  
योगशाने ॥ १२ ॥ स्वरच्चंजनशब्दरहित ॥ चंद्रविदुस्तूर्यनाद  
तत्खान ॥ हेमावल्लीअर्धमानासाहेत ॥ जाणावेनिरुते ॥  
१३ ॥ योगेंकामात्मज्ञाने ॥ जोहेगुह्यगुरुकृपाजापे ॥ इहं

वेदांचेतेणों ॥ मथनकेलें ॥ १४ ॥ जो ज्ञानियां चादेबो ॥ योगि-  
 यां चाराबो ॥ तो सर्वातीत हास्याबो ॥ मजगमला ॥ १५ ॥ तं व  
 बारिलें संतीं ॥ बारे हें न बोल विउ घडसुक्ति ॥ जों पां शुरण तं व  
 चियीनि ॥ वर्सूचे रार्यों ॥ १६ ॥ मगासंतां केली विनवणी ॥  
 जो उपसाहि जे कृपाकरूती ॥ तं व संतीं तयेस्यणीं ॥ अभय  
 केलें ॥ १७ ॥ ॥ श्लोक ॥ ॥ मा से ज्ञाने न विज्ञाने जो येच  
 हृदिसंस्थिते ॥ लब्धेशां तिपदेदेह न योगो नैव धारणा ॥ १८ ॥  
 ॥ ॥ दी० ॥ ॥ ज्ञानम्हणि जे प्रपञ्चाचाविस्तारु ॥ विज्ञान  
 तो आत्मविचारु ॥ हें विशेषण उकली श्रीगुरु ॥ तरिफावे  
 ॥ १९ ॥ जाणों पाहि जेतं ज्ञेय ॥ याचें असणे शुद्ध दय ॥  
 देहस्थिति विकार विषय ॥ अंत द्वे ती ॥ २० ॥ तें पदविचा

रेहाताच्छदे ॥ तेऽमृशंगयोगधारणानातुडे ॥ तेऽपूर्णबोधाचेनि  
स्त्रवाडे ॥ स्त्रवभोगिजे ॥ १२० ॥ अगा पृथ्वीचियेपरी ॥ जो  
शांतसालामंतरी ॥ तयाचीसरलीबारी ॥ कर्तव्याची ॥ ११ ॥  
तेणेंयोगभक्षासणे ॥ कींधारणाभरवंडधरणे ॥ हेकाहीन-  
लगेकरणे ॥ गुरुद्वयेसहजस्थिती ॥ २२ ॥ ॥ श्लोक ॥ ॥  
योवेदादैस्वरः प्रोक्तोवेदानेचप्रतिष्ठितः ॥ तस्यप्रहतिलीन-  
स्थयः परः समहेश्वरः ॥ १८ ॥ ॥ रीका ॥ ॥ वेदांभादिस्वर  
जोगणव ॥ त्यापासूनिभिमावाउगव ॥ तोध्वनिमावसंज्ञामा-  
व ॥ तोचिसत्यसूप ॥ २३ ॥ तोओंकारवेदबीज ॥ तयाचेनि  
वेदकरीकाज ॥ परीतोवेदानेचिसहज ॥ प्रतिष्ठिला ॥ २४ ॥  
तयानिरालंबींचियेसेजे ॥ जोकांनिवांतनिजे ॥ तेदेंप्रकृती

नुमजे ॥ जेकांहींकेलिया ॥ २५ ॥ तिथेप्रहृतीचीमहतस्वी  
 ॥ जेसीशून्याकाराचीभाकृती ॥ कोणीएकम्हणती ॥ सूक्ष्म  
 माया ॥ २६ ॥ तेसासावेजयाचेनिविचारें ॥ तोमहेद्वरु  
 गानिधारें ॥ परेपरतागजरें ॥ अनुभवावा ॥ २७ ॥ ॥ श्लो  
 क ॥ ॥ नावाथींमिजतेनावंयावत्यारंनगच्छति ॥ उत्तोर्यच  
 परंपारंनोकयाकिंप्रयोजनम् ॥ १९ ॥ ॥ टीका ॥ ॥ तंब-  
 चिपांगकीजेनावेचा ॥ जंवपारनपवेमहानदीचा ॥ पारपा-  
 वलियातिथेचा ॥ अनादरुकीं ॥ २८ ॥ तेसातंबचीवरीअ-  
 न्यासु ॥ जंवब्रह्मीनक्षेसोरसु ॥ ब्रह्मप्रासिद्धालियासोसु  
 ॥ अप्यासीनाहीं ॥ २९ ॥ आगरातेनपविजे ॥ तंबचिपांगेने  
 धांविजे ॥ मगतोआलिंगिलियानिवांतभासिजे ॥ धांब-

येंरहुंदे ॥ ३० ॥ ॥ श्लोक ॥ ॥ ग्रंथमस्यस्यमेधावीज्ञानवि-  
ज्ञनतत्परः ॥ पलालभिवधात्यार्थैत्यजेऽनुधमनेकधा ॥ ३०  
॥ ॥ टीका ॥ ॥ वेदशास्त्रश्रवणतोचिवरो ॥ जंबहात्तासि  
येज्ञानविज्ञानकुसरी ॥ तंबश्रद्धापूर्वकसाक्षेपकरी ॥ ला-  
गवेगें ॥ ३१ ॥ ज्ञानप्रा सनिः संशयज्ञालें ॥ मगग्रंथसह-  
स्वभास्यासराहिले ॥ कणसेंकांडनिकणघेतले ॥ सांडिलें  
कूस ॥ ३२ ॥ तैसेंतस्वज्ञानहातात्तदे ॥ मगकायकरवेशास्त्र-  
घडे ॥ दधिमथिलियाभातुडे ॥ नवनीतजैवीं ॥ ३३ ॥ तेनव-  
नीतहातींकीजे ॥ मगडेरविठेविजे ॥ तेवींस्वस्त्रपूपावि-  
जे ॥ मगभास्यास्त्ररहे ॥ ३४ ॥ ॥ श्लोक ॥ ॥ उल्काहस्तो  
यथाकाष्ठंदत्यसालोक्यतस्यजेत् ॥ ज्ञानेनक्षेत्रसालोक्य

श्राव्यानं परित्यजेत् ॥ २१ ॥ ॥ रीका ॥ ॥ जैसें धन काटा  
 बया चेचाडे ॥ हातों दिवार बपति थेइ लोकोडे ॥ द्रव्य हाता आ  
 लिया फुडे ॥ रबण तिंदिवार लेविजे ॥ ३५ ॥ तैसें ज्ञानि झेय सा-  
 धले ॥ सारा चेसार हाता सिआले ॥ अगश्नान हीरा हिले ॥  
 आपस या ॥ ३६ ॥ ॥ श्लोक ॥ यथा । मृतो न तृष्ण स्य पर्य-  
 सा किं प्रयोजनं नम् ॥ एवं तत्संपदं ज्ञात्वा किं वेदेन प्रयोजनं नम्  
 ॥ २२ ॥ ॥ रीका ॥ ॥ अगा अमृत जे बूनि जोधाला ॥  
 त्यासी दुधा चापांगा फिल्ला ॥ तैसात तत्संवेता यूर्ण बोध-  
 ला ॥ त्यासी वेद कायकाज ॥ ३७ ॥ ॥ श्लोक ॥ ॥ तै-  
 लया रामिषा चिल्लभांदी र्घंघंटा निना दवत् ॥ अवारजं  
 प्रणवस्याग्रं यस्तं वेद संवेदवित् ॥ २३ ॥ ॥ रीका ॥

वैलाचीधरजेसीअरदंड ॥ तैसीअर्धमात्राभचंड ॥ दीर्घघं  
टेचागादविनंड ॥ शीतरिलेपणं ॥ ३८ ॥ तेष्णवाप्रवा-  
चानबोलवे ॥ तेगुरआजेअभ्यासावे ॥ पूरकवासांगेघे  
नजावे ॥ सांडावेचकेदक्षिणांगे ॥ ३९ ॥ रेचकपूरकध-  
शिलियाकैसे ॥ स्थिरहोयकुभकएसे ॥ नाडीचिनिसारसे  
॥ हल्लहल्ल ॥ ४० ॥ मगधारणचिनिपैसारे ॥ प्रथमवज्ञा-  
सनआधारे ॥ छर्वहोयसपुरे ॥ अणवयोगे ॥ ४१ ॥ ए  
वंयोगाभ्यासंहायोगु ॥ पूर्णझालियाचांगु ॥ मगतोचिवे  
दविदअमंगु ॥ ऐसेंजाणे ॥ ४२ ॥ ॥ श्लोक ॥ ॥ अ-  
त्यानसरणिं कुल्बाप्रणवं चोभरारणिम् ॥ ध्याननिर्मथना  
भ्यासादेवंप्रश्यानिनगृष्टवत् ॥ ४३ ॥ ॥ टीका ॥ ॥ अर्जु

नाभात्माप्रथमभरणी ॥ धरावीभनेंकरुनी ॥ मगप्रणव  
 उन्नरारणी ॥ करावीगा ॥ ४३ ॥ ध्यानाचातोमंथा ॥ एसेम  
 थनकरिजेपार्था ॥ तेथेकुङ्डलिनीभरनीचामाथा ॥ उरीवे-  
 गीं ॥ ४४ ॥ आतांप्रत्याहारतोऐसा ॥ तूंऐकपांवीरेशा ॥ ह-  
 कारासकाराचाकेसा ॥ भावतोऐक ॥ ४५ ॥ तरीभंतरप्रवे-  
 शीसंकारु ॥ बाल्यनिर्गमीहकारु ॥ ऐसियाचेनियोगेंओ-  
 कारु ॥ घडावाकीं ॥ ४६ ॥ दोहीनाडीचीजेसंधि ॥ तेचिसु  
 शुम्भेचीभवधी ॥ परमात्म साचेबिटी ॥ धरुनिसाधावें  
 ॥ ४७ ॥ जरीपूर्वेचियापंथेचालावें ॥ तरीआधारपहिलें  
 भेदावें ॥ मगस्ताधिष्ठानायावें ॥ प्रणवबलें ॥ ४८ ॥ मग  
 तेशूनिंमणिसुर ॥ तेंभोदिजेसुर ॥ यावरीभुहतकीर ॥

साकिङ्गे गा ॥ ४९ ॥ वरतें विशुद्ध मेदि जे ॥ तेथूनि अग्नि च-  
क्रा जा इ जे ॥ तथा बरीरा हि जे ॥ सहस्र दलीं ॥ १५० ॥ सप्त  
चक्रं पूर्व ची ल्हाट ॥ देहीं भसे गा नीट ॥ आतां दुसरी चोर बहुत ॥  
पश्चि मेची संगों ॥ ५१ ॥ तथा अस्या सा सीला गि जे ॥ तरी  
आर्धीं त्रिकूट मेदि जे ॥ तेथूनि श्री हटा ये इ जे ॥ धारणा बछे  
॥ ५२ ॥ मगति जें पा विजे गो ल्हाट ॥ तेथूनि चौधे ऊट पीठ  
॥ मग अमर गुंफे सिनीट ॥ ये इ जे गा ॥ ५३ ॥ सहा वेचत न्य-  
चक्र मेदा वें ॥ मग सातवे ब्रह्म रं धाया वें ॥ तेथे खिर असा वें  
॥ कल्प कोरी ॥ ५४ ॥ ऐसीं चौदा चक्रं तु ज ॥ सात पूर्व चीं सा-  
त पश्चि मेचीं सहज ॥ सांगीतलीं साधा वथा काज ॥ आसु-  
लेंगा ॥ ५५ ॥ तेथे मना चे नि अब्ल पणे ॥ पवने उगों चीरा हणे ॥

तेहांदेवाचेलक्षम्हणे ॥ सांपडलेंवर्गीं ॥ ५६ ॥ ॥ अलोक ॥  
 विद्युम्भान्निभंदेवंपश्येत्त्वंतनिर्मलम् ॥ ताहशंपरमंसं  
 स्मरेत्यार्थ्यनन्यभाक् ॥ २६ ॥ ॥ टीका ॥ ॥ धूमरहितम्  
 निर्मल ॥ तैसीपरमात्मज्ञबाल ॥ तेस्मरावीकेवल ॥ अ-  
 नन्यभावीं ॥ ५७ ॥ मातृकाचिमरोदरी ॥ सरलीहैताचोकुस  
 री ॥ अहैतातुभवनिरंतरीं ॥ आत्माभावी ॥ ५८ ॥ विवेका-  
 चनिवल्लें ॥ हैताहजचिक्षाले ॥ तेथेंअहुभवाचेसोहळे ॥  
 स्मरणतैसे ॥ ५९ ॥ आनंदाचियेसागरीं ॥ क्रीडतेसचिदा-  
 नंदलहरी ॥ तेंपरमूपनिरंतरीं ॥ सेवाविंगा ॥ ६० ॥ ॥ अलो-  
 क ॥ ॥ दूरस्थोपिनदूरस्थः पिंडब्रह्मांडवर्जितः ॥ अमलः  
 सर्वदादहीसर्वस्थापिनिरंजनः ॥ २७ ॥ ॥ टीका ॥ ॥ अ-

ज्ञानवशेण पाहतां आत्मा दूरी ॥ ज्ञानदृष्टौ हृदयाच्च मीतरो ॥ पिं  
उब्रह्यांडमरो वरी ॥ वेगक्षाही दिसे ॥ ६१ ॥ अविद्यामध्यजे  
शरीर ॥ तेथें आत्मानि पर्वचिकीर ॥ देहीं व्यापक सद्यप-  
त्रीं नीर ॥ निरंजन तेसा ॥ ६२ ॥ ॥ श्लोक ॥ ॥ कायस्थो  
पि न कायस्थः कायस्थो पि न जायते ॥ कायस्थो पि न भुक्ते  
इसो कायस्थो पि न बध्यते ॥ २८ ॥ ॥ तीका ॥ ॥ आत्मा  
कायस्थ्यें असो निकायातीत ॥ कायानक्षेतो निम्नांत ॥  
रत्नेवं विलीं सां हुसे अंत ॥ तिथे सिजै सामो गुनाहीं ॥ ६३  
नर्षी गुणें शक गुलला ॥ तो अज्ञान पणें वाटेबांधला ॥  
विवेक पणें तो बंधना वेगक्षा ॥ गायीं चाचि असे ॥ ६४ ॥ ते-  
सामात्मा काये वेगक्षा असे ॥ काये सितयासंबंधुनसे ॥

परीमविद्येचेनियोगंभासे ॥ पिंडस्थाएसा ॥ ६५ ॥ ॥ श्लोक  
 ॥ तिलसमध्येयथातैलंसीरसध्येयथादृतस् ॥ उष्णमध्येयथा  
 गंधःफलमध्येरसोयथा ॥ २९ ॥ ॥ टीका ॥ ॥ जैसें तिला  
 आंतभसेतैल ॥ दुधामध्येदृतनिर्मल ॥ उष्णामध्येपरिमल  
 ॥ फलीरस ॥ ६६ ॥ बीजामध्येजैसाबदु ॥ कांतुनोचिपदु  
 ॥ तैसासुल्लोहनिरोबदु ॥ परब्रह्म ॥ ६७ ॥ ॥ श्लोक ॥ ॥ का-  
 ष्टुःग्निवत्यकाशेनभाकाशेवादुसंचरः ॥ तथासर्वगतोदिहो  
 देहमध्येत्यवस्थितः ॥ ३० ॥ ॥ टीका ॥ ॥ काष्ठामध्येअ-  
 ग्निपकाशे ॥ वायूत्तेऽसपेऽभाकाशज्ञेसे ॥ तैसासर्वदेहो  
 व्यापकुञ्जसे ॥ आपणापेची ॥ ६८ ॥ ब्रह्मीन्नामिस्तारु ॥ वि-  
 स्तारीञ्जन्महानिर्धारु ॥ जैसाबीजीञ्जुरु ॥ अंकुरीबीज ॥

४९॥ ॥श्लोक॥ ॥मनःस्थोदेहिनोदेवोमनोमध्येत्यव-  
स्थितः॥यावत्पश्येत्वगाकारंतदाकारेषिचिंतयेत्॥ ३१॥  
टीका॥ ॥देहांतप्रधानमन्॥मनांतआत्मानिधान॥जैसे  
साक्षिभूतगग्नि॥तैसाआत्मा॥ ७०॥ अर्जुनाहृदयाका-  
शीं॥आत्माचिंतावारेक्यप्राविंसी॥जीवशिवादोहींसी  
॥समरसकर्त्तृ॥ ७१॥ ॥श्लोक॥ ॥मनःस्थमनमध्य  
स्थिंमनःस्थमनवर्जितं॥मनसामनभालोक्यरचयंसिध्यंति  
योगिनः॥ ३२॥ ॥टीका॥ ॥अगासंकल्पविकल्पतेमन  
॥मनामध्येऽआत्मेषण॥मर्नांचीकल्पनाविरेतेवरुज्ञान  
॥तेंचरुपरुपब्रह्माचें॥ ७२॥ मनेमनभवलोकावें॥जैसेग-  
गनशून्यामेल्लवावें॥दीपेदीपातेषहावें॥सिरुस्वयंप्रकाशे

॥७३॥ पूर्णब्रह्मपरात्पर ॥ तेरेनाहीं विषयव्यापार ॥ तेरेस्व-  
 यें योगेश्वर ॥ होउनिठेले ॥ ७४ ॥ ॥ श्लोक ॥ ॥ आका-  
 शं साजसंकल्पासनः कृत्वा निरास्पदं ॥ निअलंतद्विजानीया  
 त्समाधिस्थस्यलक्षणम् ॥ ३३ ॥ ॥ रीका ॥ ॥ भूतांसक-  
 त आकाशाते ॥ मनसेक्षवावेनिरुते ॥ मगनिराभ्युपदाते  
 ॥ पावावेणा ॥ ७५ ॥ ऐसें मननि: संशयनिर्मल ॥ परतलि-  
 याबुद्धिनिश्चल ॥ जाणसमाधिस्कल ॥ लक्षणचौहे ॥  
 ७६ ॥ ॥ श्लोक ॥ ॥ शून्यामावितमावात्मा एुण्यपापैः  
 प्रसुच्यते ॥ सर्वशून्यं तदात्मेति समाधिस्थस्यलक्षणम् ॥  
 ३४ ॥ ॥ रीका ॥ ॥ चहूं शून्याभीत आत्मा ॥ अश्यसे  
 समाधिमहिमा ॥ लक्ष्यार्थलक्षणसीमा ॥ शुरलीजेये

॥ ७७ ॥ शून्यमाविनाहेयआत्ममावो ॥ ऐसामरवंडचि  
स्वमावो ॥ तोषुण्यपापीन्लिंपेनिः संदेहो ॥ मुक्तजैसा  
॥ ७८ ॥ ॥ श्लोक ॥ अर्जुनउबाच ॥ ॥ अहश्येभावना  
नास्त्रिहश्यमानंविनश्यति ॥ अवर्णपस्वरंब्रह्मकथंद्य-  
यंनियोगिनः ॥ ३५ ॥ ॥ दीका ॥ ॥ अर्जुनविनषोह-  
व्याते ॥ जीकेसेंधराबेअहश्यमावनेते ॥ आणिहश्यतरी  
नाशाते ॥ पावतअसे ॥ ७९ ॥ अकारउकारमकार ॥ ब्रह्म  
विष्णुमहेश्वर ॥ उदात्तभुदात्तस्वरितस्त्र ॥ यांअतीत  
ब्रह्म ॥ ८० ॥ तेंयोगीकेसेंचिनाबे ॥ उक्लूनिदेबेसांगाबे ॥  
जैसेंसीउमजेस्वमावे ॥ पत्नहस्तकल्पनी ॥ ८१ ॥ ॥ श्लो-  
क ॥ ॥ श्रीभगवानुबाच ॥ ॥ उर्जपूर्णमधः पूर्णमध्य

पूर्णतदात्मकम् ॥ सर्वपूर्णतदात्मेति समाधिस्थलस्थणं  
 ॥ ३६ ॥ ॥ दीका ॥ ॥ बोलेहपालु बांचारणा ॥ अधर्जर्द्व  
 मध्यसंपूर्णा ॥ केलेभात्पथाच्यालक्षणा ॥ वेदानवक्त्री ॥  
 ८२ ॥ तरीघटाकाशाभगकाश ॥ तिसरेतेमहदाकाश ॥ जे  
 मेंतीनपणनसेत्यास ॥ तेसेब्रह्मभृत्य ॥ ८३ ॥ तरीहश्य-  
 प्रपञ्चुभनात्मासांडूनी ॥ उरलेघगोचरसाधूनी ॥ सभरा  
 भरीतजाणूनी ॥ समाधिसमहृषी ॥ ८४ ॥ ॥ श्लोक  
 ॥ अर्जुनउबाच ॥ ॥ सालंबस्याप्यनित्यत्वंनिरालंबस्य  
 शून्यता ॥ उपयोरपिदोषोस्तिकथं च्यामनियोगिनः ॥ ३७  
 ॥ दीका ॥ ॥ ज्याप्रपञ्चाचेऽवलंबन ॥ तेनाशिवंतजा-  
 ण ॥ नदिसेतियासीहपर्तीश्वस्मृषोर्गीं ज्यावेतेक्षेण ॥

८५॥ जेयें असे उपाधि ॥ तें नश्वरजी चिशहि ॥ आणि अ-  
बलं बनना हो तें बुद्धी ॥ नाक लेदेवा ॥ ८६॥ मृणू निदो हीं प-  
री ॥ अटक दिसे ओहरी ॥ आतां जीयो गेश्वरी ॥ ध्यावें कै-  
से ॥ ८७॥ ॥ श्लोक ॥ श्रीमगवानुवाच ॥ ॥ हृदयं निर्म-  
लं कृत्वा चिंतयित्वा एव नामयम् ॥ अहमेव मिदसर्वमिति प-  
श्येत्परं स्फुर्वम् ॥ ३८॥ ॥ दीका ॥ ॥ तरी हृदयों चीम्हु  
रे स्फुर्ति ॥ ते आवर्हनि निरुती ॥ निर्मलपणों चिंतनगती ॥ अ-  
नामयाची ॥ ८९॥ मात्पात्र विद्या ओगसांडूनी ॥ आत्पात्र  
मात्पालदूनी ॥ मीसर्वही आत्पाल मृणूनी ॥ देरवावें पुरस-  
वस्तु ॥ ९०॥ सर्वआत्मत्वेदेरिवजे ॥ आपणतें चिह्नाइजे  
॥ मागपरस्मसुरवधाविजे ॥ नवल काई ॥ ९०॥ श्लोक ॥

अर्जुनउवाच ॥ ॥ अक्षराणित्वमात्रांश्च सर्वं बिंदुसमाप्तिं  
 ॥ बिंदुपूर्वदत्तिनादेन सनादः केन प्रियते ॥ ३९ ॥ ॥ लीका  
 ॥ फाल्गुन मूणे हृषीकेशी ॥ अक्षरांची गतिकैसी ॥ मात्-  
 कांची मरोबरी तैसी ॥ बिंदुसहित ॥ ९१ ॥ तरी बिंदुमेदिला  
 जेणेनादें ॥ तोनाहु आवरिलाकृष्णें मेदें ॥ तेऽउकल्लुभिसां-  
 गावेंगोविदें ॥ योगिराजें ॥ ९२ ॥ ॥ श्लोक ॥ श्रीमगवा-  
 उवाच ॥ ॥ अनाहतस्याशाब्दस्यतस्यशाब्दस्यचर्षभनिः ॥  
 धनेरंतर्गतं ज्योतिर्ज्योतिरंतर्गतं मनः ॥ ४० ॥ ॥ लीका ॥  
 हृदयोंजो अनुहत ॥ तोनिः शब्दबोलिजो विरच्यात ॥ त-  
 यानिः शब्दातं प्रस्तुत ॥ भेदिलें द्वनि ॥ ९३ ॥ तिथेऽधनि  
 अंतर्गत ॥ ज्योतिः प्रसेपकाशवंत ॥ तिथेज्योतिः अंतः स्थि-

त ॥ मनुजाण ॥ ९४ ॥ ॥ श्लोक ॥ ॥ तत्त्वनो विलयं यानि  
तद्विद्यांशोः परमं पदम् ॥ य एवं पश्य निष्ठानी पुण्यपार्णे न लि-  
यते ॥ ४९ ॥ ॥ दीक्षा ॥ ॥ अर्जुनातेमन ॥ जयेऽविलयो  
पाबेजाण ॥ तेऽपरमपदनिर्बाण ॥ विद्यूचेंगा ॥ ९५ ॥ ऐ-  
साजो देखणाजनीं ॥ तो चिजाणाज्ञानी ॥ तो पुण्यपार्णे न  
लिपेष्ट्राणी ॥ पद्मपञ्चजनीं जैसे ॥ ९६ ॥ जरीसदुरुषपाहे  
य ॥ आणिशिष्यश्च द्वाप्रज्ञाबक्षेलहे ॥ तरीज्ञानप्राप्तिहो  
लहे ॥ वेविलेंतये ॥ ९७ ॥ आतां ऊँ काराचेंज्ञान ॥ हेंही ऐ-  
कपां पूर्ण ॥ तु द्वापश्च संपूर्ण ॥ विशादकर्तुं ॥ ९८ ॥ ॥ श्लो-  
क ॥ ॥ ओँ कारच्छ निष्ठादेन वायुः संहरणां लिकम् ॥ निर-  
लंबं समुद्दिश्य तत्र नादो लयं गतः ॥ ४२ ॥ ॥ दीक्षा ॥ ॥

तरीषीजस्तुजोओंकारु ॥ तेषुनपणवचेसावेचाअंडुर  
 ॥ प्रथमवेदाचासमाचारु ॥ चोजवलाभसे ॥ ९९ ॥ यावे-  
 दापास्तनिजग्रभघवें ॥ हेषुतिबोलिलीस्तमावें ॥ वेदान्तसि-  
 द्धांतांवेगोंवे ॥ उकललेजेथें ॥ २०० ॥ शास्त्राचेसावभेदेत  
 काभालें ॥ जेसांरव्यमतेअतुषादिलें ॥ योगींपाहतांजेवि  
 शेषिलें ॥ अतुभवदुक्ति ॥ १ ॥ जेवेद्धांतीचेसारासारें ॥ ज-  
 पनिषदांवेगहिंवरें ॥ महाबाक्याचेनिषजरें ॥ मिळोनिअ-  
 लें ॥ २ ॥ तेंबोलोंपांबाळभती ॥ बोलतांस्तणींसंतकोपती  
 ॥ तेंउपसाहवेमहंती ॥ हृपाकस्तती ॥ ३ ॥ तरीदोंकल-  
 चांचाधेभाकारु ॥ त्यातेंहृपालीअद्दरु ॥ शिवशक्ति-  
 मेवींसाकारु ॥ निराकारुहितेसाची ॥ ४ ॥ सायाघवि

यादोहीभोद ॥ सिद्धआत्मापरमात्माहेदंद ॥ पिंडब-  
सांडाचेविभोद ॥ घटनीजांगे ॥ ५ ॥ मनपवनजेथेहर-  
पती ॥ चंद्रमूर्धीलोपती ॥ मातृकामंडलचीसमासि  
॥ जेथेहोय ॥ ६ ॥ पापुण्याचेजन्मस्थान ॥ कर्मशला-  
चेनिषेदन ॥ क्षराक्षरवामदक्षिण ॥ येथेजाहले ॥ ७ ॥  
उजेडभाणिअंधकार ॥ यादंदशब्दांचापसर ॥ ए-  
केचिरुणाशिसर ॥ ऐसीभुम्बसुकी ॥ ८ ॥ तरीम-  
णवुविहरणेवला ॥ तोमातृकांविकरला ॥ आविद्या  
विद्यावोलिला ॥ विद्याधरे ॥ ९ ॥ उफराटैस्फराटैमा-  
ला ॥ गुंतलीआदिसरला ॥ ज्ञानाज्ञानाचिद्यावला ॥  
वेद्युनिदावी ॥ १० ॥ अर्धमावेचेनिसंयोगे ॥ परमात्म

याचेनिसंगे ॥ सायान्नांडाचेनियोगे ॥ ध्वनिमात्र ॥ ११  
 ॥ सकारुपनासेसात्कीमंडला ॥ काजामात्रविंदुर्लीमे  
 दला ॥ फळेंदेऊलागला ॥ मंत्राचलीबीजे ॥ १२ ॥ हका-  
 रनादध्वनिधोषु ॥ त्यातेंम्हणतीषुरुषु ॥ आणिप्रह-  
 नीचापूर्णजंशु ॥ सकारयेथे ॥ १३ ॥ ऐसानिराकारसा-  
 ळे ॥ बोलतीजुनातकषिष्टृदे ॥ दोहींचेविषमसंधि  
 शून्यबोधे ॥ शुद्धलेविरुद्धे ॥ १४ ॥ हेंविषवज्ञालेंकोठे  
 ॥ आणिमावल्लेजेथेंनेटे ॥ तोडावोवार्यीजापूनिबो  
 टे ॥ सेविल्लाजिंहीं ॥ १५ ॥ आपणातेंनिःशेषसोडविले  
 ॥ जेवींशक्किसंपुर्तीचेसुक्लवेगळे ॥ ऐसेंहेयोगियोला-  
 धले ॥ नयानमनकेले ॥ १६ ॥ वेदांतसिद्धांतपक्षदृढ़)

उपनिषद्महावाक्यउभया ॥ अस्ति पदे अंतरनिश्चय ॥ मे-  
लविलापरमपदा ॥ १७ ॥ तरीबिंदुभेदिलानादें ॥ जैसों  
चंद्रसूर्योचींविबें ॥ प्रणवयोगेऽमातृलोनभें ॥ हरिहरा  
देखांसहित ॥ १८ ॥ ॥ श्लोक ॥ ॥ अर्जुनउवाच ॥  
मिन्नेपञ्चात्मकेदेहेपञ्चानांपञ्चधारातिः ॥ प्राणीर्विसुक  
देहस्यधर्माधर्मैष्टगच्छतः ॥ ४३ ॥ ॥ रीका ॥ ॥ श  
रींमिन्नेंमिन्नेंपञ्चात्मकें ॥ पांचांच्चाराहटीवेगाळिया  
देववें ॥ शरीरींप्राणभेदियानिःशोषें ॥ तेधर्माधर्म  
कोरेंगोले ॥ १९ ॥ ॥ श्लोक ॥ ॥ श्रीशगवानुवाच ॥  
धर्माधर्मैमनश्चैवपञ्चमूलानियानितु ॥ इंद्रियाणिच  
पञ्चतयेचात्येपञ्चदेवताः ॥ ४४ ॥ ॥ रीका ॥ ॥ लरीध-

पर्वधर्माद्येकत्तेष्य ॥ हें चिमनगासावेव ॥ प्रकृतिगुणं दिसेते  
 व ॥ कर्मचीयथा ॥ २० ॥ तैसं चिरं दियां चेभाव ॥ तेथें प-  
 च मूलां चीवरव ॥ परीप्रकृतिलोपों निरावेव ॥ देवपणादे  
 ती ॥ २१ ॥ तेथें संकल्पविकल्पात्मकमन ॥ तैसं चिज्ञतः  
 करणादं चक्षाण ॥ इच्छायोगें संपूर्ण ॥ धर्माद्यर्थक-  
 लिपती ॥ २२ ॥ परीइच्छादेयेभाज ॥ तेमनतिं प्रवर्तवी  
 सहज ॥ मग्नप्रकृतिकरीकाज ॥ गुणयोगे ॥ २३ ॥ आ-  
 तांधर्माद्यर्थाद्यफल ॥ मग्नयोगीत्वसेकेवल ॥ तेमनस्त-  
 रुपीं होयनिश्चल ॥ तरीषफावे ॥ २४ ॥ ॥ श्लोक ॥ ॥  
 तथेव मानसाः सर्वं नित्यमेवाभिमानिनः ॥ जीवेन सह  
 एव च्छन्ति यावत्संनेव विदति ॥ ४६ ॥ ॥ लीका ॥ ॥ हें अ-

द्युवेंकरणेंसनाचें ॥ मिथ्या भूतपि सें अभिभानाचें ॥ जी  
वासीषं द्युरणाचें ॥ रुतः मिहूची ॥ २५ ॥ संकल्पे  
अवधें घडी ॥ विकल्पें सर्वस्वमोडी ॥ अहंताचरफडी ॥  
तत्त्वशाननाहीं ॥ २६ ॥ जिकडें जिकडें मनजाय ॥ तिकडेतिकडे  
जीडुहोय ॥ स्वर्गनरकभपाय ॥ भोगीत असती ॥ २७ ॥  
श्लोक ॥ ॥ अर्जुनउवाच ॥ स्थावरं जंगमं शपियत्कि  
चित्ताचराचरम् ॥ जीवाजीवेन जीवित्तिसजीवः केन जीव-  
ति ॥ ४६ ॥ ॥ टोका ॥ ॥ देवास्थावरभाणिजंगम ॥ च-  
राचरभवधें निः सीम ॥ जीवें जीवित्तिआभम ॥ तोजी  
वकासयानिजीवे ॥ २८ ॥ ॥ श्लोक ॥ ॥ श्रीभगवानुवा-  
च ॥ सुरवनासिकर्योर्मध्येयाणः संचरते यदि ॥ आकाश-

पिबते प्राणं स जीव स्तेन जीवनि ॥ ४७ ॥ ॥ टीका ॥ ॥ त-  
 री मुरवा आणि नासि कायांत ॥ प्राण असे गावर्तत ॥ जो  
 आकाशी असे लीन होत ॥ जीव जीवे आकाशे ॥ २९ ॥ प-  
 री प्रहृति संगें जें दिसे ॥ तें स्थावर बोलि जो ऐसे ॥ जंगम ने  
 मनास रिसे ॥ हिंडे कल्पना सुक ॥ ३० ॥ स्थावरा सी मूलां  
 चासंगु ॥ जंगमा सी प्रबन्धा चावेगु ॥ ऐसा चराचरीं चांगु ॥  
 बोलूचि स्वये ॥ ३१ ॥ तरी प्राणा सी आहारु अन्नाचा ॥ अ-  
 न्नासी निपज्जका सधाचा ॥ अन्नसंबंदुतो मूलांचा ॥ निप  
 जलागा ॥ ३२ ॥ कणुतो श्रह्मा पृथ्वी ज्ञाणाचा ॥ उदकतो  
 विष्णुमूर्णाचा ॥ अग्निपाकतो रुद्र कल्पाचा ॥ ऐसा नैवे  
 द्यईश्वरा सी ॥ ३३ ॥ आकाश तो शब्दगृण ॥ ब्रह्मतं वनि-

रुणसगुण ॥ निरुणाविलयोतेरुण ॥ सुमारीअसे ॥  
३४ ॥ तरीआकाशदिसेनिर्मल ॥ तेयेनेणोंकेचंउठिलेमेध  
पटल ॥ तेंआकाशेंकेलेनाहींकेबल ॥ तेंसहजचिहोय ॥  
३५ ॥ तैसेचिबंधमोक्षदोन्ही ॥ पाहतांदिसेकल्पतेचेवा  
णी ॥ तेकल्पनाजयापास्तुनी ॥ नास्तिहोय ॥ ३६ ॥ जेये  
रुणबातीनिवर्तलिया ॥ मायाअविद्यामाधारलिया ॥  
चतुष्प्रसुनिरुद्धरलिया ॥ तेंशस्त्रिस्त्रिणिजे ॥ ३७ ॥ तें  
पूर्णशस्त्रसहजे ॥ प्रहृतिकदानेणिजे ॥ तेंगुरुगुर्भीजाणि  
जे ॥ गुरुरुपा ॥ ३८ ॥ ॥ श्लोक ॥ अजुनउवाच ॥  
ब्रह्मांडव्यापिनंव्योमव्योम्नाचावेष्टितंजगत् ॥ अंतर्ब-  
हिस्थितंव्योमकथंव्यापनियोगिनः ॥ ४८ ॥ ॥ श्लोक ॥

अर्जुनम्हणेदेवाकेसे ॥ जीमजएकसंशयअसे ॥ तोहु-  
पाकहुनिविश्वेशर्हे ॥ फेडावाजी ॥ ३९ ॥ तरीपिंडआणि  
ब्रह्मांड ॥ घटमठवितंड ॥ हेंव्योमव्यापीप्रचंड ॥ सर्वक-  
ल ॥ ४० ॥ आणि हेंसकलआकाशी ॥ पिंडब्रह्मांडपरि-  
येसी ॥ घटमठसकळांसी ॥ व्यापूनिअसे ॥ ४१ ॥ म्हणू-  
निसबाल्हभंतरी ॥ आकाशअसेनिरंतरी ॥ आलंकाय  
योगेष्वरी ॥ ध्यावेंकेसे ॥ ४२ ॥ ॥ श्लोक ॥ ॥ श्रीभ-  
गवानुवाच ॥ आकाशोद्भवसाकाशसाकाशव्यापितं  
जगत् ॥ आकाशस्यगुणः शब्दोन्मिः शब्दं ब्रह्मउच्चते  
॥ ४३ ॥ ॥ टीका ॥ ॥ अर्जुनागायसियेसी ॥ हेऽव-  
काशपंणेपोकल्लीआकाशी ॥ तेसेहजाहेंविशेषी ॥

व्यापिलेनम् ॥ ४३ ॥ मृणनि आकाशा माजी जग ॥  
आणि जगा आकाशीं लग ॥ हें बुझे जो चांग ॥ तो चिन्ह  
धन्य ॥ ४४ ॥ आणि सबा द्वानम् जो से ॥ तैसा आत्मा  
सबा द्वय व्यापक असे ॥ हें आत्म त्वं जपा दिसे ॥ तो चिन्ह-  
नी ॥ ४५ ॥ येथें व्यावें आणि चिन्तावें ॥ हें काहीं न लगे रख-  
भावें ॥ परीकांहीं जरी अनुष्ठावें ॥ तरीनें ही ऐका ॥ ४६ ॥  
अगाज पध्यान क्रिया ॥ हें शब्द होय धनं जया ॥ तो शब्द  
गुण विषय जाय लया ॥ आकाशीं गा ॥ ४७ ॥ तैक्ष्णं निः  
शब्द चिन्ता असे ॥ तैं क्रिये विरहित दिसे ॥ तैथें सक छ  
ही अपैसे ॥ गाके करणे ॥ ४८ ॥ ॥ श्लोक ॥ ॥ अर्जुन  
उचाच ॥ दं तोष्टता लुजिक्षानां यतदं य भव शयते ॥ अ-

क्षरत्वं कुतस्तेषां सरत्वं वर्तते सदा ॥ ५० ॥ ॥ रीका ॥ ॥  
 तरीदांत ओरता लुजि ल्हाक रहनी ॥ अक्षरां चाउचारु होउ-  
 नी ॥ तें भिधारा ब्देला गेस्थानी ॥ पदकैसे ॥ ४९ ॥ हें बो-  
 लि लें तें दिसे अक्षर ॥ केउ तें असे शब्द अनक्षर ॥ हें सांगा  
 वें जी सविस्तर ॥ छ पाक रहनी ॥ ५० ॥ ॥ श्लोक ॥ ॥ श्री  
 मारवानुवाच ॥ अधोषभव्यं जनमस्वरं च अलालु दंतो  
 शुभनासि कंच ॥ विरेफ जातं परमूष्मवर्जितं तदक्षरं नक्ष-  
 रते कदाचित् ॥ ५१ ॥ ॥ रीका ॥ ॥ अर्जुनाबापु सर्सी  
 कैसे ॥ जेधें धोषाचारा शब्दनसे ॥ उदास अनुदात स्वरि-  
 तत्व कैसे ॥ कल्पावेंगा ॥ ५१ ॥ आणि व्यजनमृणावे-  
 का सर्याते ॥ काना सात्र बिंदु लैं जाये ॥ आतां स्वराचिया

उहारातें॥ सांगिजेलु॥ ५३॥ अस्त्रसंशब्दकरीएकाक्षर ॥  
वायसांचाह्यक्षर ॥ मयूराचाच्यक्षर ॥ अर्धस्वरसुरुसाचा  
॥ ५३॥ ऐसेहेओत्स्वर ॥ वरुतुस्वरहितकिर ॥ नालुजि-  
हादांतओष्ठनासिकउच्चार ॥ जेथेनलगती ॥ ५४॥ अ-  
कुलेंहसदीर्घस्वरें ॥ आकाशसंयोगेउच्चारें ॥ ऐसाउच्चा-  
रउगलेपणेचिस्थिरे ॥ तैसेहीनाहीं ॥ ५५॥ ऐसेंजेअन-  
क्षर ॥ पक्षहृथरहितप्रात्पर ॥ परमात्मयाचेविश्वाम  
मंदिर ॥ तेनक्षरेकदा ॥ ५६॥ जेअंतःकरणआंगपडे ॥  
आगमनिगमाङ्कबाडे ॥ तेथिलेनिअरबंडस्करबाडे ॥ रम-  
हिजेसु ॥ ५७॥ ॥ श्लोक ॥ ॥ अर्जुनउबाच ॥ इंद्रि-  
याणानिरोधेचदेहेनश्चंतिधानवः ॥ देहेनहेकुतोबु-

हिंदुहिंनाशोकुलोक्षता ॥ ५२ ॥ ॥ लीका ॥ ॥ अर्जुन  
 विनवीजनादर्जा ॥ इंद्रियांच्याकरितांदमननिरोधना  
 ॥ देहधातुनासतीनाशयणा ॥ धातुनाशीदेहनासे ॥  
 ५३ ॥ विकल्पदेहेंदुहिंनासे ॥ दुहिंभाशीशाननसे ॥ शा-  
 नेंवीणकेसे ॥ बोधासीघे ॥ ५४ ॥ ॥ श्लोक ॥ ॥ श्रीआ-  
 गवातुवाच ॥ ॥ तावदेवनिरोधः स्थाद्यावस्तत्वं नविद-  
 ति ॥ विदितेच परेतत्वेऽकमेवातुपश्यति ॥ ५५ ॥ ॥ ली-  
 का ॥ ॥ अर्जुनात्ववरीयुक्तसाधन ॥ देहंदियांकीजेद-  
 मन ॥ जंवहातासीनचदेखात्मरत्न ॥ निजवस्तु ॥ ५६ ॥  
 अगासाधूसीभजावे ॥ शुद्धवासनापुण्यकरावे ॥ क-  
 रुनिमालियामोहोरांभर्पावे ॥ कर्मनिष्ठमेसी ॥ ५७ ॥

ऐसिया जन्म अभ्यासे ॥ मात्रें पाविज्ञेऽनायासे ॥ तु  
ज्ञिये पुंसी सरसे ॥ सांगीतलेंगा ॥ ६२ ॥ ॥ श्लोक ॥

नवछिद्रेसु देहे स्वर्वं निधिकाइव ॥ एवं बाल्ये नश्वर्यं  
निपुणान्नत्यापि विन्दति ॥ ५४ ॥ ॥ रीका ॥ ॥ अग्ना  
नवछिद्रेशरीरीं ॥ तीर्णवतो घटके चियापरी ॥ ऐसें बा-  
हीं जेदेह शहिकरी ॥ आणि तीरी हातै सेंचि ॥ ६३ ॥

मनश्वरुप मावेभरले ॥ वरीशरीर किया अचंकारले ॥  
ऐसें सबाल्यज्ञाले ॥ निर्मलै ॥ ६४ ॥ ऐसाबाहेर तीरी  
रीं चोर घटज्ञाला ॥ गुरुसंगें पुनीतु केला ॥ आत्मतीर्थ  
नाहला ॥ अत्यविदनो ॥ ६५ ॥ ॥ श्लोक ॥ ॥ अत्यंत  
मलिनोदेहो देही चात्यंत निर्मलः ॥ उपयोगतं रंज्ञाला

कस्यशोचं विधीयते ॥ ५५ ॥ ॥ दीका ॥ ॥ तरीप्रकृति  
 आणि पुरुष ॥ यांचाकरितां निर्देश ॥ तं बदेही शोचाचा  
 अंश ॥ आहे कोटे ॥ ६६ ॥ प्रकृतिनं बनाही जाणीला ॥  
 हे कासयाची घडली ॥ आत्प्रसंगेचेष्टा देरिवली ॥ ये रुवीं  
 नाहीं ॥ ६७ ॥ तरी इच्छेचेनिस्करवाडे ॥ रचूनि प्रपंचाचेंद-  
 ळवाडे ॥ स्थूलसूक्ष्मपंचमूलरबाडे ॥ चतुष्पथकेलीं ॥ ६८  
 ॥ पंचीकरणेपरस्परभेळे ॥ घडतीज्ञालीं इंद्रियङ्गुळे ॥ वि-  
 षयाचेनिबळे ॥ ओटियलीं ॥ ६९ ॥ निकोणचतुष्कोण  
 दीर्घवाटेले ॥ प्रपंचघडणीं घडलेसरबे ॥ तेयेतसंचीण-  
 गनरवेळे ॥ जयापरी ॥ ७० ॥ नैसाभात्माशक्तुनिर्म-  
 ळ ॥ नयासीघटाचानलगेमळ ॥ घटभंगलियाकेवळ ।

वक्तृचिभसे ॥ ७१ ॥ महणूनिप्रहृतीचाउक लुनकीजे ॥  
तंवशुद्वचिन्ताहींसहजे ॥ जन्ममरणाचेनिकाजे ॥ घेपत  
असती ॥ ७२ ॥ समुदायानांवगाडाबोलिजे ॥ मगाए-  
कएकनगधेगळाल्डकीजे ॥ तेथेंगाडेयणतुरिजे ॥ जया  
परी ॥ ७३ ॥ ऐसेप्रहृतिद्वियांचेचिगोंबेऊगावे ॥ जालि  
याआत्माचिस्वभावे ॥ अंतःकरणचतुष्टयगेलियाअसा-  
वे ॥ निर्मलपणे ॥ ७४ ॥ परीअर्जुनाएकपाही ॥ येथे  
आत्माअसतांदेही ॥ दोहींसीसंबंधनाही ॥ जेवींघटीं  
नाम ॥ ७५ ॥ देहाआत्मयाअंतर ॥ असेजाणनिरंतर ॥  
देहमलिनपूर्वापार ॥ पंचमूलात्मक ॥ ७६ ॥ आणिसंक-  
ल्पविकल्पमन ॥ प्रहृतीतीनगृण ॥ वासनासपजाण

मलिन ॥ उपाधिकहे ॥ ७७ ॥ ऐसेहें शरीर ॥ मलिनगा  
 साचार ॥ आत्मासर्वातीतभगोचर ॥ तो अत्यन्तशुद्ध ॥ ७८  
 ॥ आतांजे उपाधिअशुद्ध आहे ॥ तेशुद्धकहीं चिनावे ॥  
 आणि आत्माशुद्ध आहे ॥ तो अशुद्ध नव्हे ॥ ७९ ॥ आ-  
 तां तु वां ऐसें करावे ॥ आत्मवतचिनिर्पळ होआवे ॥ मग  
 कांहीं न लगेकरावे ॥ ऐसें जाण ॥ ८० ॥ तो आत्मा ऐसें मु-  
 णसी ॥ तरी तो चिनूं शुद्ध आहेसी ॥ मग तु जउपाधीसी ॥  
 संबंधनाही ॥ ८१ ॥ ॥ श्लोक ॥ ॥ ज्ञानासृतेन त्रृप्तस्य  
 कृतहृत्यस्ययोगिनः ॥ नैवास्तिकिं चित्कर्तव्यसमित्वेन  
 सवत्सवित् ॥ ५६ ॥ ॥ लोका ॥ ॥ ज्ञानासृतेन त्रृप्तयोगी  
 ॥ तो चिकृतहृत्यजगी ॥ करणेन करणें हेघगी ॥ नाहीं त

त्वज्ञानियासी ॥ २८२ ॥ ॥ उंतत्सदिति श्रीमद्भगवद्गीता सूर्यनिषत्स ब्रह्मविद्यापांयोगशा स्त्रेश्रीकृष्णार्जुनसंवादे श्रीमहाभारते अथ व्येध पर्वणि शानतस्त्रहसंहितायां उत्तरगीताज्ञानविवरणं नाम प्रथमोऽन्यायः ॥ १ ॥ ॥

### अथ द्वितीयोऽन्यायः

श्रीगणेशायनमः ॥ ॥ श्लोक ॥ ॥ अर्जुनउवाच ॥ ॥  
ज्ञात्वासर्वगतं ब्रह्म सर्वज्ञं परमेश्वरम् ॥ अहं ब्रह्म तिनिदं  
सुं प्रमाणं तत्र किं भवेत् ॥ १ ॥ ॥ टीका ॥ ॥ जीसर्वब्र-  
ह्मजाणीतलें ॥ सर्वज्ञपरमेश्वर हेही कल्पलें ॥ सो जीवात्मा

ब्रह्मत्पणितलें ॥ तेर्थेऽपभाणकारी ॥ १ ॥ आणिसर्वग  
 तब्रह्मज्ञालें ॥ तेंचिब्रह्मज्ञानपरमेश्वरेऽहणितलें ॥ अहं  
 ब्रह्मनिर्धारिलें ॥ चासीयसाणकिसें ॥ २ ॥ ॥ श्लोक ॥  
 श्रीभगवानुवाच ॥ ॥ यथा जलेऽजलं क्षिप्तं क्षीरेक्षीरं  
 दृतेऽदृतं ॥ अविशेषोऽभवेत् दृज्जीवात्मा परमात्मनि ॥  
 ३ ॥ ॥ तीका ॥ ॥ जब्बाहोयजब्बेंसिभेटी ॥ क्षीरीक्षी  
 रस्तीदृतासांवी ॥ तैसीजीवापरमात्मयासींभेटी ॥  
 येधेंसंशायनधरीं ॥ ४ ॥ आतांत्पदतोजीवात्मा ॥  
 नत्पदतोपरमात्मा ॥ असिपदतदात्मा ॥ दोहोंचेहो  
 य ॥ ५ ॥ जरीपरमात्मयाचासब्रह्माच्यांशसांडाचा ॥  
 जीवाचाप्रपञ्चसांडुनिशुद्धकरावा ॥ उपमयतांलक्ष्यांशु

मेलवावा ॥ चिन्मानेंकरूनी ॥ ५ ॥ याचाविवरुषोलता  
॥ ग्रंथुनावरेसर्वथा ॥ मृणूनिसकलितार्थनिरोपितां  
॥ श्लोकार्थफावे ॥ ६ ॥ ॥ श्लोक ॥ ॥ जीवप्रेणता  
दात्म्यं सर्वगं ज्योतिरीश्वरस् ॥ प्रमाणलक्षणं शेषं स्व-  
यमेकाग्रबेदिना ॥ ३ ॥ ॥ तीका ॥ ॥ जीवशिवएक  
साले ॥ जैसेंदीपेंद्रीपाक्षेमदिद्यलें ॥ सर्वहीज्योति-  
स्वरूपदेरिवलें ॥ प्रमाणेंकरूनी ॥ ७ ॥ प्रमाणलक्ष-  
णजेंशेष ॥ स्वयमेकाग्रब्रह्मस्वये ॥ ऐसें अहूयनिःसं-  
शये ॥ जाणें आपणपांची ॥ ८ ॥ ॥ श्लोक ॥ ॥ ज्ञा-  
नात्मावितं शेषं विदित्वात्मणेन तु ॥ ज्ञानमानेण  
सुच्यतेकिं युनर्थो गधारणात् ॥ ४ ॥ ॥ तीका ॥ ॥ तरी

ज्ञानापासूनिहोयज्ञेय ॥ तेणेऽसुभवेवसुमय ॥ त्याअ  
 तुभवीतल्कणीभव्य ॥ होउनिठाके ॥ ९ ॥ लेयमात्रे  
 भवपाशतुटती ॥ होयसोक्षपदाचीषासि ॥ सागुतीयो  
 गधारणाचिन्ती ॥ कांधरावीगा ॥ १० ॥ आप्रहेऽस्यासु  
 कीजे ॥ धारणालक्ष्मिभस्ति ॥ यमनियमेंपोडिजे ॥  
 याणासिगा ॥ ११ ॥ तेप्रथमारंभीचसाधक ॥ सूटदशा  
 सम्बक ॥ लेयसमाधीचिंकोतुक ॥ सुरोनिगेले ॥ १२ ॥  
 श्लोक ॥ ॥ ज्ञानेनदीपितेदेहेबुद्धिब्रह्मासमाधिना ॥ ब्र-  
 ह्मज्ञानाग्निनानित्यदहनंसुण्यपापयोः ॥ ५ ॥ ॥ लीका  
 ॥ ज्ञानदीपेंकरूनीआत्मभावदेवावा ॥ बुद्धिब्रह्मीसमा-  
 धानकरूनीवेद्युलावावा ॥ ब्रह्माग्निअरबुद्धेतवावा ॥

पापपुण्यदर्थहोय ॥ १३ ॥ मृणसीहेक्सेनिहोय ॥ तरी  
सहस्रसाजोलाहे ॥ त्यासीहेप्राप्तिहोतभाहे ॥ संदेहका  
यी ॥ १४ ॥ ॥ श्लोक ॥ ॥ अंतः पवित्रं परमेश्वरारथमहे-  
तरूपं विमलं बराभ्यम् ॥ यथोदकेतोयमतु पविष्टत्वात्म  
रूपं निरुपाधिसंस्थम् ॥ ६ ॥ ॥ दीक्षा ॥ ॥ आगामं अंत-  
रिं जो पवित्रं असे ॥ तथाज्ञानहोय अपेसे ॥ तो परमेश्व-  
रूपविषोषे ॥ सर्वभद्रवे ॥ १५ ॥ तो चिअदैतरूपएक ॥ नि-  
र्मलु अलोकिक ॥ जैसें काउदक ॥ आकाशीर्णे ॥ १६ ॥ आ-  
णि उदकींउदक धालिजे ॥ तेथें भेदकांहींचतुरिजे ॥ तेसे  
तेणें होइजे ॥ अद्यसदा ॥ १७ ॥ जीवशिवां समरसकेले  
॥ आपण तें चिहोऊनिराहिले ॥ तेआत्मरूपपावले ॥ निर-

पाधिक ॥ १८ ॥ ॥ श्लोक ॥ ॥ आकाशबद्धमरीर  
 आत्मानहृष्यतेवाचुरिवांतरात्मा ॥ सबाद्यस्यंतरनि-  
 श्वलगत्माज्ञानोल्कप्याहृष्यतेचांतरात्मा ॥ ७ ॥ ॥ दीक्षा  
 ॥ अगा आकाशासारिरवेंसूक्ष्मशरीर ॥ आत्मयाचेऽसे  
 सपुर ॥ कोणीस्फृणतीवाचुआत्माकीर ॥ तरीतैसानोनहे  
 ॥ १९ ॥ विकारवर्जितनिश्चल ॥ बाद्यअस्यंतरीनिर्मल ॥  
 ज्ञानहृषीपाहतांकेवल ॥ अंतरात्मातो ॥ २० ॥ ऐसाज्ञा  
 त्मसूपजोझाला ॥ तोसर्वव्रच्यापूनराहिला ॥ रिताठा  
 वोनाहीउरला ॥ तयाचेनिज्ञाने ॥ २१ ॥ ॥ श्लोक ॥  
 यव्रथन्नभूतोज्ञानीयेनकेनापिमृत्यना ॥ यथासर्वग  
 नंव्योमतव्रतवलयंगतः ॥ ८ ॥ ॥ दीक्षा ॥ ॥ अगा

ज्ञानियासीमरण ॥ शुचिभूताकुञ्चलस्थानं ॥ ज्वरेभ्या-  
धिशारुञ्जक्षेभिनदहन ॥ भलतेचिपरी ॥ २२ ॥ श्रीगुरु-  
चैश्रवणशब्दे ॥ पाधेणुण्यकर्महोतीदग्धे ॥ सर्वभ्यापक-  
त्वेभिजेनभें ॥ तैसातोबोध ॥ २३ ॥ तोजेयेभेस्यूलसू-  
क्षमपंथेजाय ॥ तेथेतेथेपरमपदचिआहे ॥ तोजिताचिलोन  
आहे ॥ मरणाखांतु ॥ २४ ॥ जोआत्मासर्वभ्रहोउनिअसे ॥  
तथागवोरितानदिसे ॥ तेथेकायसंपिसे ॥ शुद्धाशुद्धस्थ-  
वाचें ॥ २५ ॥ अगाशृष्टीनंकवणेकडेजावें ॥ आकाशेका-  
रेंपळावें ॥ तैसातोझालास्तमावें ॥ पूर्णज्ञानें ॥ २६ ॥ त-  
याअनुभवेसांमसे ॥ जोआत्मयामरणचिनसे ॥ देहो  
तरीभंतवंतदिसे ॥ तोसृनिकेवगळानक्षे ॥ २७ ॥ ॥

श्लोक ॥ १८ ॥ शरीरं व्यापितं येन सुवना नि चतुर्दशा ॥ निश्च  
 लो निर्मलो देही सर्वव्यापी निरंजनः ॥ १९ ॥ ॥ टीका ॥  
 चैदा भूवनी आणि शरीरां ॥ जो व्यापक निरंतरीं ॥ माव  
 क्षुलें जैसे व्योम विकारीं ॥ निश्चलते सा ॥ २० ॥ गुरुवच  
 नीं घंसणीं मना चेसाङ्गु निर्मल ॥ सर्वयहोय निर्मल ॥ स-  
 वव्यापकु निरंजन के बळ ॥ तेसानो ही ॥ २१ ॥ ॥ श्लोक ॥  
 सुहृत्सपियोगस्थो नासाधि मनसाधि ॥ सर्वतरति  
 पाप्यानं क्षुलतं जन्मशतेरपि ॥ २२ ॥ ॥ टीका ॥ ॥ क्षरा-  
 क्षराचीयोगमिलुणी ॥ नासाधीं करी रेवणी ॥ एक चि  
 सुहृत्करुनी ॥ सर्वपातके तरे ॥ २३ ॥ जन्मकल्पको  
 दिशते ॥ गर्भवासाधेणं नाहीं सागृते ॥ जो बोधलागृ

रुद्रकांते ॥ तोचिधन्य ॥ ३१ ॥ ॥ श्लोक ॥ ॥ दक्षिणेपिंग-  
लाजाडीसूर्यमंडलगोचरा ॥ देवधानमिनिशेयंतुहि क-  
र्माहुसारिणी ॥ ११ ॥ ॥ टीका ॥ ॥ पिंगलाजाडीदक्षि-  
णश्वासे ॥ सूर्यमंडलप्रत्यक्षप्रकाशे ॥ शक्तिचेषागील  
अंगसकारऐसे ॥ युटीलहकारुशिवाचे ॥ ३२ ॥ येद्येजो  
होयसावध ॥ त्याचीजचकर्महोतीदग्ध ॥ युष्याचेनला-  
गेसिद्ध ॥ साधकरिती ॥ ३३ ॥ ॥ श्लोक ॥ ॥ इडाचबाम  
निश्वासाचंद्रमंडलगोचरा ॥ पिन्दृधानमिनिशेयंतल्सर्वप्रा-  
णिनांहृदि ॥ १२ ॥ ॥ टीका ॥ ॥ इडाचबामरंधीस्वरवशे  
॥ चंद्रमंडलाचेनिसोरसे ॥ शिवाचेअपीगवसे ॥ सकार  
सुक ॥ ३४ ॥ ऐसीसर्वप्राणियांचेहृदयीं ॥ प्राणबोजा-

सर्वं प्रतिष्ठितं तस्मिन् च सर्वं विश्वतो सुरवं ॥ तस्य मध्यगताः  
 सूर्यसोमाग्निपरमेश्वरः ॥ १५ ॥ ॥ दीका ॥ ॥ सूर्यअसे  
 गा सर्वदेहीं ॥ ब्रह्मांडीत्तेसेंचिपाहीं ॥ वेदपुराणींशुतोंही  
 ॥ हेंचिप्रतिष्ठिलें ॥ ४५ ॥ नाभिस्थानाहूनिवरता ॥ सूर्य  
 बाराकल्पींनिरुता ॥ नालुभूलींचंद्रतत्त्वता ॥ जाणाखागा  
 ॥ ४६ ॥ सूर्यच्याबाराकल्पा ॥ रुणूनितोनीचनाभीज-  
 बल्पा ॥ चंद्रचतुष्यकल्पींआगला ॥ रुणूनिउच ॥ ४७ ॥  
 उभयांच्याकल्पाबाराबारा ॥ समताङ्गालियासमीरा ॥ चं-  
 द्रचतुष्येंअधिकरोरा ॥ सूर्यअपुराचतुष्यें ॥ ४८ ॥ चंद्र  
 स्थानाच्यावामास्करु ॥ सोक्षालीवरीसतराविद्येचामारु  
 ॥ तोचिब्रह्मसर्वेष्वरु ॥ संबुद्धासंगे ॥ ४९ ॥ ॥ श्लोक

॥ मूलोकादिशः क्षेत्रसमुद्राः पर्वताचलाः ॥ हीयाञ्चा  
धागमावेदः शारूपविद्याकलाक्षराः ॥ १६ ॥ ॥ टीका ॥  
तरीञ्जकारापास्त्रनिमूले ॥ दिशालोकसमुदपर्वताते ॥  
हीयेऽगमवेदशारूपाते ॥ प्रसवलातो ॥ ५० ॥ विद्याया  
णिकब्दा ॥ याक्षरोभावासकब्दा ॥ प्रसवलाएकवेळां ॥  
मात्यायोगे ॥ ५१ ॥ ॥ श्लोक ॥ ॥ स्वरामात्राः पुराणानि  
गुणान्येतानिसर्वेशः ॥ बीजं जीवात्मकं तेषां क्षेत्रशः शा  
णवाहकः ॥ १७ ॥ ॥ टीका ॥ ॥ स्वरामात्रांचाजिह्वा  
ब्दा ॥ गुणधर्मधर्मसकब्दा ॥ अठरापुराणां चीकब्दा ॥  
मूलञ्जकारु ॥ ५२ ॥ अवधियांचेष्वोजनिः सीमा ॥ प-  
वर्तीं आरु जीवात्मा ॥ मूलनिचराचरमहिमा ॥ शो-

भायमान ॥ ५३ ॥ ॥ श्लोक ॥ ॥ सुषुम्नांतर्गतंतस्मिन्देह  
 कंदंभविष्टितम् ॥ नानानाडीप्रसवगंसर्वं भूतांतरात्मनि  
 ॥ १८ ॥ ॥ दीका ॥ ॥ तरीतोचिआत्मारूपरसीकैसा ॥ सु-  
 द्यस्सुषुम्नेचियाएसा ॥ देहकंदजीवासरिसा ॥ प्रतिष्ठावं-  
 तु ॥ ५४ ॥ तोचिप्रसवलानाडीते ॥ आत्मेपणे भूतांच्याअं-  
 तराते ॥ व्यापूनिसर्वजीवाते ॥ तिष्ठतुअसे ॥ ५५ ॥ क्षेत्रसु-  
 तयातेर्हणिजे ॥ नेणे सर्वदेहींव्यापूनिअसिजे ॥ तोपवन  
 रूपोंजरीकल्पिजे ॥ तरीअंतरात्मा ॥ ५६ ॥ ॥ श्लोक ॥  
 ऊर्ध्वमूलमधः शारवंवायुभार्गेणसर्वगम् ॥ द्विसप्ततिसह  
 स्नापिनाड्यः स्युर्वास्युगोचराः ॥ १९ ॥ ॥ दीका ॥ ॥ तरीवा-  
 चूचें ऊर्ध्वमूल ॥ अधः शारवासकल ॥ देहव्यापकवायुचे

केवल ॥ अथ उद्धर्वपणे ॥ ५७ ॥ न डोज्या बाहा तरी सहस्रा ॥  
न बसूत्रीं अगोचरा ॥ परीदोहीं चारु मारा ॥ उभारला असे  
॥ ५८ ॥ तरी उद्धर्व सूल प्राण ह कारे ॥ अधो मूल अपान स-  
कारे ॥ उद्धर्व गती अधो गती चतुरे ॥ बोलिलीं पुण्य पापे  
॥ ५९ ॥ पुण्ये चर्चगलोक पावावा ॥ पापे निरयलोक मोगा-  
वा ॥ पुण्य पापां चार हेयावा ॥ तैं च मुक्त होय ॥ ६० ॥ मृ-  
णूनि पाप पुण्य असतां ॥ मोक्ष नाहीं गास र्वया ॥ उभायं  
चेनि संसार मोगितां ॥ सुक काना हीं ॥ ६१ ॥ याला गीं अ-  
र्जुना ॥ पुण्य पापां चासना ॥ सांडूनि आत्म शाना ॥ मि-  
यह कीजो ॥ ६२ ॥ ॥ श्लोक ॥ ॥ कर्मणा गर्ण प्रकल्प र स्थे-  
र्यस्थः सुषिरात्म कादः ॥ अथश्चोर्ध्वं गता स्तासां सर्वहारणि

शोधयेत् ॥ २० ॥ ॥ दीका ॥ ॥ चंचलाभाणिनिश्चलाना  
डी ॥ यांगभ्येमात्मयाचीभाटी ॥ परमात्मयाचीपरबडी ॥  
मांडिलीदेहीं ॥ ६३ ॥ अधआणिझर्वगतीयांची ॥ सबहा  
रींनांदणूकहेची ॥ येरस्यारुदयोभस्तुची ॥ वासुसंबंधे ॥  
६४ ॥ तोवासुकर्मभाग ॥ झर्वकीजेअस्यासयोग ॥ तरी  
स्थिरहोयवेग ॥ ब्रह्मरंध्री ॥ ६५ ॥ ॥ श्लोक ॥ ॥ वासुना  
सहजीवोऽयंज्ञानमोदमवासुयात् ॥ अमराषतिलोके  
स्पन्दसुरवायेपूर्वलोदिशि ॥ २१ ॥ ॥ दीका ॥ ॥ वासुचे  
आंगभंकुरवध ॥ त्याचीनांवजीवनीबध ॥ ग्रंपंचचेष्टण-  
चेमावविविध ॥ निहींसातृकीं ॥ ६६ ॥ अर्थमानेचउस्यार-  
णे ॥ त्यानांवसमष्टिष्ठणे ॥ ज्ञानमोदमवरमार्थसाधणे

॥बोलियेले ॥ ६७ ॥ अविद्येचेजया अवतरण ॥ नैचिबोलि  
लेजीवं प्राण ॥ आतां ब्रह्मांडीं चेविवरण ॥ बोलविंकों ६८  
॥ जिकडे सूर्यांचेउगवणे ॥ त्यासुरवाकडे पूर्वम्हणणे ॥ इ-  
द्रलोकाचेंताणे ॥ कर्मसार्ग ॥ ६९ ॥ ॥ श्लोक ॥ ॥ अग्नि  
लोकमविजेयं चक्षुर्लोजोवतीपुरी ॥ याम्यासंघमिनीश्चो-  
भेयमलोकः प्रतिष्ठितः ॥ ७० ॥ ॥ टीका ॥ ॥ अग्निलो-  
क अग्निदिशोजाणावे ॥ तेजोवतीपुरीचक्षुम्हणावे ॥ दक्षि-  
णेयमलोकाप्रतिष्ठावे ॥ यमासहित ॥ ७० ॥ ॥ श्लोक ॥  
नैर्भृतोत्थधनत्पाशवेको वेरलोकमाश्रितः ॥ विभावतीप्र-  
तीच्छांतु पृष्ठेवासुणिकीपुरी ॥ ७१ ॥ ॥ टीका ॥ ॥ नैर्भृत्य  
लोक अर्जुना ॥ मार्गेंकु वेराचेअधिष्ठाना ॥ वासुणीपुरीप

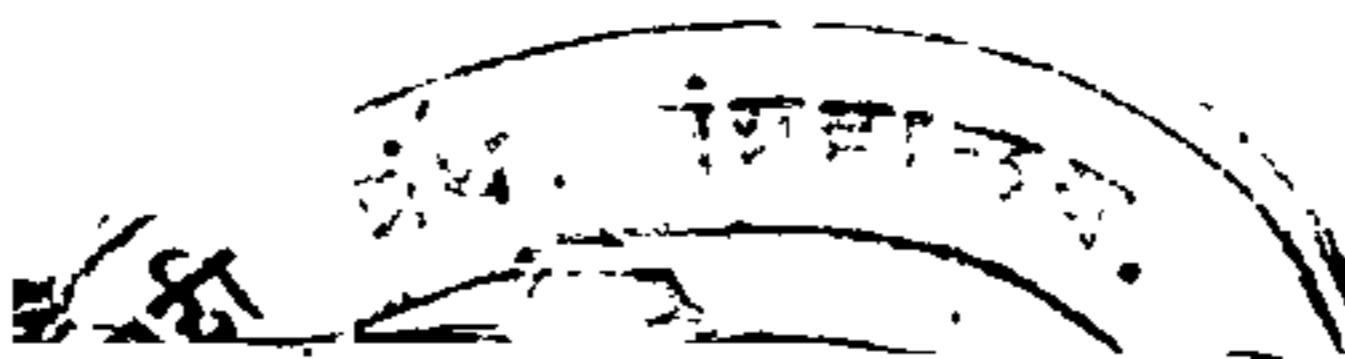
हाणा ॥ पश्चिमेकडे ॥ ७१ ॥ ॥ श्लोक ॥ ॥ वासेगंधवती  
 कर्णेवायुलोकप्रतिष्ठिते ॥ सोमेपुष्यवतीज्ञेयाचंद्रलो-  
 कप्रतिष्ठिता ॥ २४ ॥ ॥ टीका ॥ ॥ गंधवतीवामवायव्य  
 दिशे ॥ तेथेवायुलोकअसे ॥ उत्तरेपुष्यवतीनगरकैसे  
 ॥ निरंतरतेथेचंद्रलोक ॥ ७२ ॥ ॥ श्लोक ॥ ॥ वामक-  
 र्णेतुविशेयादेहमाश्रित्यतिष्ठुति ॥ वामचक्षुषिचैशाने  
 शिवलोकोमनोन्मनी ॥ २५ ॥ ॥ टीका ॥ ॥ तरीडावेअ-  
 गोईशान्यदिशा ॥ सूर्वेहर्नीजाणिजेसरंवसा ॥ षोडश-  
 कल्पोजोतलारसा ॥ शरीरनांवे ॥ ७३ ॥ तेचंद्रमंडलवि-  
 सावेजेये ॥ सूर्याचेउगवणेपूर्वेतेये ॥ सूर्यापूर्वेचंद्रप-  
 श्चिमेते ॥ वौल्डगतअसे ॥ ७४ ॥ तोचंद्रमनेसहित ॥ मा-

याजाळं निमालं जेये ॥ हैं चिशि व पदनामं शांत ॥ शिव-  
लोक शब्दे ॥ ७५ ॥ ॥ श्लोक ॥ ॥ सूर्धि ब्रह्म सुरीजे या ब्रह्म  
देह मात्रितः ॥ पादादधः शिवोऽनंतः कालग्निप्रलयांत-  
कः ॥ २६ ॥ ॥ दोका ॥ ॥ सूर्धि ब्रह्म सुरीजा णावी ॥ ब्रह्म  
देह मात्रित महणावी ॥ ओटपीठी स्वभावी ॥ कोटि सूर्य प्र-  
काशु ॥ ७६ ॥ यणवाचार्षे वटीलचरण ॥ जो निहीं गु-  
णांते ग्रासून ॥ आणि प्रपञ्च संहारून ॥ धनिमावें सो अ  
से ॥ ७७ ॥ त्याढँ कारचें सुरशोधन ॥ निराकार ओट  
चरण ॥ एक ब्रह्मादुजा विष्णु निजा शिवजाण ॥ अर्धपाद  
ते चेतना ॥ ७८ ॥ यास कळांचे सूब्द बीज ॥ ३५ कारु बोलि  
जेनिज ॥ ते थूनियां सहज ॥ विस्त्रा रुम कळ ॥ ७९ ॥ का-

द्वाग्निरुद्रतोसर्वसंहारी ॥ यपंचाचीमोंबरीबोहोरी ॥ मग  
 शिवज्ञानपदाचीउजरी ॥ बोलिलीजसे ॥ ८० ॥ ॥ श्लो  
 क ॥ ॥ अनासयमधश्वेष्मध्यमंतर्बहिः शिवम् ॥ अ-  
 धः पादललंविद्यात्पादांतंवितलंविदुः ॥ २७ ॥ ॥ टीका  
 ॥ आदिमध्यञ्जवसानीएक ॥ जोचराचरीच्यापक ॥ त्या-  
 सीबोलीबोलतांतर्क ॥ माधारला ॥ ८१ ॥ तयानामनिर्दि-  
 शनसे ॥ मृण्णनिष्मनामबोलिजेएसें ॥ तयाचेंकायकेसे  
 ॥ सांगावेरूप ॥ ८२ ॥ जेयेंशब्दमावब्दला ॥ अनुवादरु-  
 तला ॥ झगडातुटला ॥ मीतूंपणाचा ॥ ८३ ॥ तेंसकळ-  
 चेंजीवन ॥ परात्परसंपूर्ण ॥ तेंगुरुहपेंबीण ॥ नकळेकदा  
 ॥ ८४ ॥ आतांविराटाचीस्थिति ॥ अवेषीबोलावीकिती

॥ परीतेषोलाच्यासंकेतीं ॥ षोलावीलागे ॥ ८५ ॥ तरीपा  
यांरवालींतब्द ॥ पायांचेचवड्यावरीवितब्द ॥ आतांसांगि  
जेलसकब्द ॥ विवरुनी ॥ ८६ ॥ ॥ श्लोक ॥ ॥ अतलंपा-  
दसंधिस्थंस्कतलंजंघमुच्यते ॥ रसानलंचजानुःस्यादूरुदे  
शोपहातलम् ॥ २८ ॥ कटिस्तलातलंभोक्तंसपातालसंजि-  
तम् ॥ पातालानाभधोमूलंभोगींद्रफणिमंडलम् ॥ २९ ॥  
लीका ॥ ॥ अतंब्दपादसंधिअसे ॥ स्कतब्दजंघप्रदेशो ॥  
रसानलजानूष्वसे ॥ महातब्दतेऊरुसी ॥ ३० ॥ कटिप्रदे-  
शींतब्दातब्द ॥ ऐसेंहेसपाताब्द ॥ पातालाचेअधोमूल  
॥ नेहुंडलिनीगा ॥ ३१ ॥ ॥ श्लोक ॥ ॥ चेष्टतेसर्वतोऽन-  
तंसर्वंचहृदिसंस्थितम् ॥ मूर्लेकोनाभिदेशेतुमुवलीक

अकुक्षिगः ॥ ३० ॥ ॥टीका॥ ॥तरीपाताबासीचेष्टि  
 लेंमन् ॥ तेहृदयींप्रकाशेऽनान् ॥ आतांसत्यलोकाचेस्था  
 न् ॥ सांगिजेत् ॥ ८९ ॥ देर्हींसप्तलोकांचीसाक्षी ॥ पथसमू  
 र्लोकनाभिमंडलीं ॥ मुवलोकतेकुक्षावद्धी ॥ जाणावीणा  
 ॥ ९० ॥ ॥श्लोक ॥ ॥ हृदयंतस्तवलोकःसूर्यादिप्रहप-  
 येयात् ॥ सूर्यःसोपःसनक्षभोवुधोरुरःकुजोमृगः ॥ ३१  
 ॥टीका॥ ॥ रवलोकतोहृदयकमद्धीं ॥ तेष्टसूर्यादिप्रह-  
 चीसाक्षी ॥ सूर्यसोपनक्षभावद्धी ॥ हृदयींजसे ॥ ९१ ॥  
 बुधभाणिष्ठहस्पनि ॥ मंगलाचीहीतेष्टवर्ली ॥ मृगूचीही  
 गति ॥ हृदयींजसे ॥ ९२ ॥ श्लोक ॥ ॥ मंदःसप्तष्ठोऽ  
 याभ्यवांतःसर्वलोकलृत् ॥ हृदयेकत्ययेहोतस्मिन्सर्व



सुरवावहम् ॥ ३२ ॥ ॥ श्लोक ॥ ॥ मंदभाणिसप्तऋषि ॥  
धुरुभांपलियालोकांसी ॥ देहददयाकारी ॥ देहराजुक-  
त्पी ॥ ३३ ॥ देहोदयोचेष्टाने ॥ कल्पिलींजबघीस्थाने  
॥ इच्छाचेष्टित्वरणे ॥ कारणमूल ॥ ३४ ॥ कोणग्रहकोण  
मूलाचेष्टाले ॥ हेंगुससीकेसेकेले ॥ वर्णव्यक्तीहीमूर्खिण-  
तले ॥ महाऋषि ॥ ३५ ॥ तरीमूर्यमङ्गलतांषडेमनिपा-  
साव ॥ सोमशक्तशुभभापसावेव ॥ गुरुबुधपूर्वीचेठेव  
॥ पीतवर्ण ॥ ३६ ॥ शनिभाकाशकाले ॥ जैसेतुणवर्णी  
जाले ॥ तैसीकांनिडोले ॥ वायूचेनिष्क्रेत्रहुकेतु ॥ ३७ ॥ ऐ-  
सीहेप्रपञ्चस्थिति ॥ जाणसीयथानिगुर्ती ॥ तेआत्माहुसं-  
धार्नींवर्तती ॥ तथांसीफावे ॥ ३८ ॥ ॥ श्लोक ॥ ॥ ब्रह्म-

॥ हें ज्ञानहस्तीं अवलोकिजे ॥ ये हरीं नाहीं ॥ १४ ॥ तै साझा  
 न हस्तीं पाहतां आत्मा ॥ घटाका रावत लोचिजी वात्मा ॥ य  
 दम बनारीं परमात्मा ॥ निरालंब अवधारी ॥ १५ ॥ ॥ श्लो  
 क ॥ ॥ तपेहृष्टसहस्राणि एकपादस्थितो नरः ॥ एकत्वध्या  
 न योगस्थकलां नाहीं तिषोडशीम् ॥ ४१ ॥ ॥ टीका ॥ ॥ पा-  
 र्थनिपश्चत संवत्सुर सहस्र ॥ भूदरी एकां गुणें केलें निरंतर ॥  
 तेषें तपें मातें पाविजे हास्त्रयकिर ॥ न धरावागा ॥ १६ ॥ ए-  
 कध्यानभास्त्रें सावेदीं ॥ जरीघडे सत्यस्वकारीं ॥ तरीहुं स-  
 हातपक्ष्मासो छावी ॥ ध्यानाची न पढे ॥ १७ ॥ तरीहानो  
 पदेशों निर्मलें ॥ अरवंडध्यानाचेनिष्क्लें ॥ सतराविधेचेनि  
 मेक्लें ॥ पाविजे मातें ॥ १८ ॥ ॥ श्लोक ॥ ॥ श्रस्त्रहत्यासह-

नागिरीरहत्याशननिच ॥ एकेन्द्रध्यानयोगेनदृष्टे  
मिनिवेधनम् ॥ ४२ ॥ ॥ लीका ॥ ॥ तरीब्राह्मणस्थाणिजे  
मनासी ॥ वीरहृणिजेकामन्त्रोधांसी ॥ यांतेहतिलीचा  
जीवश्वसासी ॥ वेगलीकमाहीं ॥ १९ ॥ तरीब्रह्महत्येचा  
विवरू ॥ वीरहत्येचाविचारु ॥ यादोहोंचासांगोंसमाच-  
रु ॥ प्रकटकर्त्ती ॥ २० ॥ मनाचियासहस्रात्मी ॥ काम  
क्रांधांचियासहस्रात्मी ॥ छेदनिषरवेरीतीं ॥ करावेद्या-  
न ॥ २१ ॥ याब्रह्महत्यासहस्रकरी ॥ वीरहत्याशनवरी  
॥ ध्यानयोगेजल्लतीपायेंक्षणाशीतरीं ॥ अग्नींद्यनज  
वेजैसें ॥ २२ ॥ ॥ श्लोक ॥ ॥ अश्वमेधसहस्राणिवाज  
पैयशानानिच ॥ एकस्यध्यानयोगस्यकलांनाहीतिषोड-

शीम् ॥ ४३ ॥ ॥ टी० ॥ ॥ अगा अश्व मेध सह स्व करा वे  
 ॥ बाज पेय शतां च भेष ल्लावे ॥ तरी अद्यान यो गं वीण न पवे ॥ स  
 तरा वी चंकीर ॥ २३ ॥ तरी अश्व मेध मृण ण जे ॥ तो यो गि-  
 ये ए पवन साधि जे ॥ इंद्रिय विषय ब्रह्मा गनी हो मिजे ॥ तो वा-  
 ज पेय यज्ञ ॥ २४ ॥ यावे गल्ले रथा भक्त र्ण सो डिजे ॥ क्षिति  
 जिं को निः अश्व मेध की जे ॥ तै से चिवाज पेय अनुष्ठि जे ॥  
 सह स्व शते ॥ २५ ॥ है यज्ञ सि द्वी स जाती ॥ तरी स्व गौ इंद्र  
 पदी बै स ती ॥ स्व गौ स्फुर व सो गिती ॥ मग अद्य वती ए उप यद्य-  
 ये ॥ २६ ॥ ऐ से है यज्ञ सो ल्लावी क ल्ला ॥ ए क अद्यान यो गा वी  
 ण न दे र वती डो ल्लां ॥ मा ब्रह्मा न द स्फुर व सो ह ल्ला ॥ कै चा  
 ल्यांसी ॥ २७ ॥ ॥ श्लो० ॥ ॥ अनंतं कर्म शो चं च ज प यज्ञ

स्त्रीयैव च ॥ वेदाध्ययनतीर्थीनियावस्तुत्वं न विंदति ॥ ४४ ॥  
टीका ॥ ॥ तरीभ्यनंतकर्मशोचजपथङ् ॥ वेदशास्त्राभ्या  
सतीर्थीगमन ॥ हेतं वचिवरीसाधन ॥ जं वते आत्मतत्त्व  
नेणिजे ॥ २८ ॥ ॥ श्लो० ॥ ॥ तावद्वचनिसंसारेयावद्वा-  
त्मानविंदति ॥ विदितेच परेतत्त्वे एकमेवानुपश्यति ॥ ४५ ॥  
टीका ॥ ॥ अर्जुनातं वचितो संसारी ॥ भीष्मन असेषोर्नो  
भीतरी ॥ चौन्याशीलक्षणरीरी ॥ येतजातु ॥ २९ ॥ हायपं  
च आणि आत्मा ॥ ऐसे गुरु मुरवें नाहो बुझावला महात्मा  
॥ जेणें जाणी तलें परमतत्त्ववर्मी ॥ अद्वैतरूपें ॥ ३० ॥ तो  
पुनरपिउपाधीसी ॥ नलिं पेगासंसारासी ॥ परमतत्त्वस्त्रा  
त्मपासी ॥ एकत्वें फावले ॥ ३१ ॥ ॥ श्लो० ॥ ॥ अहं ब्र-

हेतिवक्तव्यमक्षरदृयसात्मनः ॥ सूक्ष्मसुचरितं देन ब्रह्मत-  
 त्वं न संशयः ॥ ४६ ॥ ॥ दीका ॥ ॥ सोहं शब्दाचादे हीं ह-  
 चारु ॥ अहं ब्रह्म एसा निधारु ॥ तो अनक्षर अदृय आत्म-  
 विचारु ॥ ब्रह्मनिः संशयते ॥ ३२ ॥ ऐसे अहं ब्रह्म उच्चारि-  
 ती ॥ ब्रह्माहम् स्मिजे हणती ॥ मृष्टपूनियां तेवती ॥ आ-  
 त्मरूपी ॥ ३३ ॥ तेब्रह्मचिगाज्ञाले ॥ गुरु सुररेणु ज्ञावले ॥  
 निर्विकारणावले ॥ आत्मरूप ॥ ३४ ॥ ॥ श्लोक ॥ ॥ च-  
 तु वर्दधरो विष्णुः सूक्ष्मं ब्रह्मन विंदति ॥ वेदमारभाकांतः स-  
 वै ब्रह्मास्यणगदभः ॥ ४७ ॥ ॥ दी० ॥ ॥ ज्याविष्णां सीचारी वे-  
 दां सामस्यासु ॥ आणि सूक्ष्म ब्रह्माचाना हीं लेशु ॥ तो अ-  
 ज्ञानमारयाह कस्तु शै ॥ श्लोक ॥ ३५ ॥ ॥ श्लो० ॥

परित्वा चतुरो वेदान् धर्मशा स्त्रं पनकथा ॥ नाहं श्रस्ये नियो  
विद्या हृषीपाकर संयथा ॥ ४८ ॥ १० ॥ अगाचारी वे  
द्य दिन्नला ॥ धर्मशा स्त्रा चाभाराबांधिला ॥ आणि आ  
त्मज्ञानीं ज्ञाला ॥ विमुखज्ञो ॥ ३६ ॥ मीश्रस्य असें जाणित  
लें नाहीं ॥ संत संपर्क न धरी कांहीं ॥ यडुसां मध्ये असूनिरस  
नेणो कांहीं ॥ चाढुजैसा ॥ ३७ ॥ ११ ॥ यथा रवर श्व  
दन भार वाही भारस्य वेत्तान तुचं दनस्य ॥ एवं विप्रावेदशा-  
स्त्रैश्च पूर्णज्ञाने नहीं नाः रवर वह हंति ॥ ४९ ॥ १२ ॥  
जैसें रवरा वरीचं दन काष्ठघातलें ॥ तेसो क्लेन क्लतो भारें चि  
दडपले ॥ तैसे विप्रवेदशा स्त्रै पटिन्नले ॥ कारणार्थ नेण-  
ती ॥ ५० ॥ १३ ॥ अहारनिद्रा भयमैथुना निस-

मानिचेतानि शणां पशुनाम् ॥ ज्ञानं नराणां अधिकं विशिष्टं  
 ज्ञाने नहीं नाः पशुभिः समानाः ॥ ५० ॥ ॥ दी० ॥ ॥ आ-  
 हारनिद्रामये सुन् ॥ पशुनरांते हीं समान् ॥ पशुहनिन  
 गं विशेषजाण ॥ अधिकते ज्ञान असे ॥ ३९ ॥ ते से ज्ञानाधि-  
 कारी वेदविद् ॥ रुद्रपूनिते सर्वं हीं विद्य ॥ आणिपटिनलि-  
 या हीं पूर्वसिवद्दृ ॥ तरीपशुचते ॥ ४० ॥ ॥ श्लोक ॥ ॥ पशु-  
 नमूनपुरीषाैश्यां साध्या न्हेदकत्पिपासया ॥ तृताः कामेन  
 बस्यते जंतवो निशि निद्रया ॥ ५१ ॥ ॥ दीक्षा ॥ ॥ श्रातः  
 काळीं पूर्वभाणपुराषां ॥ मस्यान्हों मोजन ताहान सीर  
 सी ॥ याउपरी इच्छाकामासी ॥ ऐसे च नित्यपूत्य ॥ ४१  
 ॥ याउपरी निद्राकरणे ॥ ते थें हीं विषयांगोगणे ॥ परीप-

इलेंसंसारेंधरणें॥ त्याचीकथानाहीं॥ ४२॥ ॥ श्लो०  
॥ नादबिंदुसहस्राणि कोटि बिंदुशतानि च॥ सर्वत इस्तु  
णिहृतंयोविदनिरापयम्॥ ५२॥ ॥ ई०॥ ॥ तरीजों  
कारापास्त्रूनिमातृकासहजे॥ मातृकांसर्वेनादभासिजे  
॥ मातृकांसीकानामात्राबिंदुलेंकोजे॥ याचिनांषबीजु  
॥ ४३॥ ऐसियाषीजांचेमंत्रजाले॥ कामनापरवेफल-  
देउलागले॥ परीआत्मजानेवोणसुकले॥ परमपदा ॥  
४४॥ ऐसेनादबिंदुमंत्रशतकोटी॥ परीष्वस्त्रानिरास-  
सुरवेजरीउठी॥ तरीतयांचीहुटहुढी॥ भ्रस्मकरी॥ ४५  
॥ ऐसेंजयासीगाघडे॥ तोप्रवपाशापास्त्रूनिविषडे॥  
येसांसीसर्वथानातुडे॥ निरापय॥ ४६॥ ॥ श्लोक॥

गवामनेकवर्णानांक्षीरस्याद्येकवर्णता ॥ क्षीरवत्सश्य-  
 निजानंलिंगानांतुगवांचयथा ॥ ५३ ॥ ॥ ८६ ॥ ॥ ननाव-  
 र्णिंगाचीभिन्नाअसती ॥ परीक्षीरसाभवर्णएकचिस्थि-  
 ती ॥ तेसींशरीरेभिन्नेबहुवर्णदेरिवजेती ॥ परीआत्माए-  
 क ॥ ४७ ॥ अगान्नानियाचेहष्टी ॥ भिन्नपरस्परेस्त्रष्टी ॥ श-  
 रीरींलिंगाकारांचीपरिपारी ॥ स्थूलहीदिसे ॥ ४८ ॥ तरी  
 आत्मासर्वगत ॥ एकचिअसेनित्य ॥ ऐसेजाणतीअत्यं-  
 न ॥ ज्ञानहष्टी ॥ ४९ ॥ आणिलिंगदेहस्त्रूमशरीर ॥ का-  
 रणदेहाचेंबिदार ॥ आतांमहाकारणसपुर ॥ त्याउपरी  
 उच्चनी ॥ १५० ॥ रौचागमियांचींलिंगोंबोलिलीं ॥ आचार  
 मुरुशिंवप्रसादेंजंगमकेलीं ॥ परीयामध्येवस्तूचिसंच-

ली ॥ देरं वती ज्ञानी ॥ ५९ ॥ ॥ श्लोक ॥ ॥ देपदेवं धमो-  
क्षाय निर्ममेति मसेति च ॥ ममेति बध्यते जंतु न ममेति भ्रमु-  
च्यते ॥ ५४ ॥ ॥ टी० ॥ ॥ तरीबंध आणि मोक्ष हे शब्द ॥  
दों परीचेभनि हं हू ॥ समता आणि निर्ममता भेद ॥ व्याक-  
रण सिद्ध ॥ ५२ ॥ जो माझें पाझें रुणे ॥ तो मात्यासो हें शु-  
ल्लाङ्ग ज्ञाने ॥ आपुलं आत्म हित न नेणे ॥ तो बांध लास स-  
रे ॥ ५३ ॥ जो गुरु सुर बं आपण ॥ तें सोडवी ॥ समविषय ने-  
णे प्रपंच पदवी ॥ अवधी निर्ममता बोला वी ॥ मोक्ष पद ते ॥  
५४ ॥ ॥ श्लो० ॥ ॥ मन सोहा त्वं नीभा वै है तनै वी पलभ्य-  
ते ॥ चक्र चक्र मनोभा वृत्त चक्र त च परं पदम् ॥ ५५ ॥ ॥ टी० ॥  
जैथें जैथें मना चा अभावो ॥ तेथें तेथें पर ब्रह्मा चारा वो ॥

आनंदुसहजस्वभावो ॥ ५५ ॥ आणिक-  
 ल्पनेसरिसेंधांवेमल ॥ तेंचिसंसारबंधन ॥ तेकल्पनावि-  
 शलियाजाण ॥ परमपदप्रोते ॥ ५६ ॥ ऐसेंजेमन्नुदुर्दीभ-  
 नीत ॥ जेस्वानंदसुक्षमदेतित ॥ तेंचिजाणपूर्णसरित ॥ आ-  
 त्यबोधे ॥ ५७ ॥ ॥ श्लो० ॥ ॥ हन्त्यान्मुष्टिराकाशंकृ-  
 धार्तः कंडयेनुषान् ॥ ब्रह्मतत्त्वं नजाना नितस्य सुकिर्जा-  
 यते ॥ ५८ ॥ ॥ टी० ॥ ॥ कृधार्तसुरींधरीमुसब्द ॥ आ-  
 कोशोंमूसकांडीकेबद्द ॥ त्याचाउदीपञ्चव्याचिनिर्फल  
 ॥ जेणेंकृधानवचे ॥ ५९ ॥ कांमुष्टिअकाशहाणीतलें ॥  
 तेथेंकांहींचनाहींसाधलें ॥ तेंजेसेव्यर्थझालें ॥ जयाप-  
 री ॥ ६० ॥ तेसींवेदशास्त्रपराणे ॥ अतिष्ठेलागींअस्या-

सणे ॥ चर्चाकरीसुसेज्जाडादेणे ॥ परीनातुडेतेणे आत्मआ-  
वो ॥ १६० ॥ आणि सुक्षिनपवेसर्वथा ॥ नचटेयोगाचिया  
मार्थ्यां ॥ जेवीं फलदृष्टुफणितां ॥ नातुडेकणु ॥ ६१ ॥ वे-  
दशारुन्नेत्यासीचयमाणे ॥ जयाआत्महितार्थां अस्या  
सणे ॥ अर्थाचेऽमंतररुणे ॥ बुद्धितेवरी ॥ ६२ ॥ तोचि  
सुक्षपार्था ॥ ऐसें जाणसर्वथा ॥ बुद्धियोगां हितार्था ॥  
प्रवर्तलाजो ॥ ६३ ॥ तोचिधन्यजगी ॥ तोचिज्ञानीतोचि  
योगी ॥ जो बुद्धलाचांगी ॥ सहुरसुरवें ॥ १६४ ॥ ॥ ७५ ॥ त  
त्तदिति श्रीमद्भगवद्गीतासूपनिषत्सु ब्रह्मविद्यायां योगशा-  
स्त्रेश्रीष्टुष्णार्जुनसंवादेश्रीमहाभारतेः इव मे धर्मपर्वेणि शा-  
तसहस्रसंहितायां ज्ञानदेवीतीकायां ब्रह्मोपदेशोनामदि-

तीयोऽध्यायः ॥२॥ ॥श्रीकृष्णार्थणमस्तु ॥ ॥ओंची-  
संरव्या १६४ ॥ श्लोक ५६ ॥ ॥एकंदरसंरव्या ३९० ॥

अथतृतीयोऽध्यायः

श्रीगणेशायनमः ॥ ॥श्रीसच्चिदानन्दासून्नमः ॥ ॥श्री  
भगवानुवाच ॥ ॥अनंतशास्त्रं वहुवेदितव्यमत्यन्त  
कालोवहुविघ्नताच ॥ यत्सारभूलत्तुपासितव्यं हसोय-  
थाक्षीरमिवांबुमिश्रम् ॥ १ ॥ ॥टी०॥ ॥अर्जुनामनंत  
शास्त्रेऽमस्यासारींजगर्ति ॥ तरीमायुष्यथोडेंयायुगर्ति ॥ अ-  
नंतविद्वाचीआंगी ॥ लेइलेग्राणिये ॥ १ ॥ तरीजेंकांसा-  
रवस्तुआत्मज्ञान ॥ याचीकराहीकरात्मवण ॥ जैसेराज-

हंसकरीक्षीरपान ॥ पाणीसाडिमसार ॥ २ ॥ ॥ श्लो० ॥  
पुराणं मारते वेदः शास्त्राणि विधानिच ॥ पुनरदारादि-  
संसारो योगाभ्यासस्य विघ्नकृत् ॥ २ ॥ ॥ री० ॥ ॥ पुरा-  
णमारतवेदाभ्यास ॥ आणिशास्त्रीष्वहुवस ॥ पुनरभ्य  
यादि संसारसोस ॥ पर्वं इहेतु ॥ ३ ॥ हे योगाभ्यासासी  
करितीविश्व ॥ चहं कर्तव्याकुलहोयमन ॥ तेथं योगाचे  
साधन ॥ कें संहोय ॥ ४ ॥ जं वजं वदे रवे स्त्रियां ची सुरवव-  
रव ॥ नारुण्यपणाचाहावमाव ॥ अब्दं कारवरुच्छ्रेदरवे अ  
वैव ॥ डोल्केमरु निपाहे ॥ ५ ॥ तेहं सगतिचाले जेधवां ॥  
कटि सूत्रनितं बाची बरवा ॥ हास्यवदनहृषीचारेवा ॥ चाह-  
हाल्कीतमसे ॥ ६ ॥ पर्योधरां चेउचावृले ठकार ॥ चांपेगो

रहेवतुच्चाकार ॥ देवतोपंचबाणविकार ॥ धैर्यतिंसंगिती  
 ॥ ७ ॥ याकारणेंसंपत्तिसोरु ॥ मेल्लवीजनेकमोगविला-  
 रु ॥ कन्यारुभांचाहव्यासु ॥ नानापरीसंश्रम ॥ ८ ॥ ते-  
 क्षांतुध्येसाररवीहांव ॥ व्यामोहामुलीपडेसावेव ॥ ऐसे-  
 नियोगेंविमाचीधांव ॥ योगसिद्धीनपवे ॥ ९ ॥ तैसेंचि-  
 पुराणशास्त्रम्यासी ॥ लोकिंमानवेआपणासी ॥  
 अहंतादांधीपारीसी ॥ अभिपानपावे ॥ १० ॥ ऐसीना-  
 नापरीचींविधें ॥ योगियांतेंगिवसितीप्रथतें ॥ संतस-  
 मागमाचेपेणे ॥ दुरीदुरावे ॥ ११ ॥ एकशब्देंचिश्वावे-  
 लती ॥ मनींकामऋधतुच्छाचीव्यासी ॥ जाणीवपण  
 चीमहती ॥ अहंमलीची ॥ १२ ॥ आसुलेंपरावेंधरावे-

चित्तीं ॥ भावार्थकांहीं चन बोलती ॥ प्रकृतिस्तभावाची  
गती ॥ न संडेची ॥ १३ ॥ मृणतो आत्मीजाणी तलें निर्वा-  
ण ॥ परीस्तार्थ हृषीं साधन ॥ ऐसियां चं जाले पण ॥ काय  
करावें ॥ १४ ॥ तयां कें चायोगा प्रथास ॥ जयाउ प्राधी सीसो  
रस ॥ ते अवधे पावती नास ॥ प्रवर्तले हियोगे ॥ १५ ॥ हे अ  
सो तु अर्जुना ॥ आतां जे प्रवर्तले योग ज्ञाना ॥ सांडनि संसा-  
रवेधना ॥ ते चिआइक ॥ १६ ॥ नरीजो अनंदे आ॒सडतु ॥  
आप परे साना हीं हेतु ॥ विश्वसुक्त चिद्रवतु ॥ ब्रह्मावबो-  
धे ॥ १७ ॥ ते चियोगा धिकारी ॥ जे गुरु भक्त चराचरी ॥ ते-  
चिपावले बरवेपरी ॥ स्वहिताते ॥ १८ ॥ ॥ श्लो०॥ ॥ इदं  
ज्ञानमिदं होयं तत्त्वं सातु मिच्छति ॥ अपि वर्ष सहस्रेण

शारुन्नांतंनाधिगच्छति ॥ ३ ॥ ॥ टी० ॥ ॥ अर्जुन हेशन  
 आणिझेय ॥ जाणावयाचीधरिलीहांव ॥ मृणूनिवेदशा  
 न्नांचीधांव ॥ धांडोळिती ॥ १९ ॥ ऐसें सहस्रवरुषें विजारि  
 तां ॥ आत्मतखनसाधेतत्त्वतां ॥ नद्येकर्मबुद्धीचियाहाता  
 ॥ गुरुप्रसादें विण ॥ २० ॥ श्रीगुरुसीशरणजाय ॥ आणि  
 तयाचीकृपाहोय ॥ तरीआत्मज्ञानलग्नहे ॥ येहवींनाहीं  
 ॥ २१ ॥ ॥ श्लो० ॥ ॥ विज्ञापाद्वरतन्मानंजीवितंचापि  
 चंचलम् ॥ विहायशारुन्नजालानिधत्सारंतत्सपाचरेत्  
 ॥ ४ ॥ ॥ टी० ॥ ॥ अगाविज्ञानजाणावयाअक्षर ॥ शो  
 धावेंमातृकांचेंगल्हर ॥ तरीजीवितचंचलभपार ॥ आसु  
 अथोईं ॥ २२ ॥ तरीहेंजाळेंकैसेंउकले ॥ मृणूनिपाशातो

डीवहिले॥ विषयज्ञानआवरितांभलें॥ समताबुद्धि॥ २३  
॥ अगाशास्त्राचेसारासार॥ उपनिषदांचेगङ्कर॥ तेंचिअ<sup>४</sup>  
स्यासावेंकिर॥ आत्महितालगर्ण॥ २४॥ ॥ श्लो०॥ ॥  
पृथिव्यानिमूलानिजिल्होपस्थनिमित्कम्॥ जिल्हो  
पस्थपरित्यागेपृथिव्याकिंप्रयोजनम्॥ ५॥ ॥ री०॥  
अगापृथिवीवरीजितुकींमूलें॥ तितुकींजिल्होपस्थनिमि  
तें॥ यांचीवासनाशरीरातें॥ सोडूनशके॥ २५॥ याचिका  
रणेंवेदशास्त्रास्यास॥ नानाउदिमाचेसायास॥ तपातोर्या  
चेबहुवस॥ विषयभोगाकारणें॥ २६॥ ऐसेमूलांचेआ-  
चरण॥ चौन्याशीलक्षजीवन॥ पृथिवीवरीसाधन॥ हेंति  
करिती॥ २७॥ तरोसंसारबंधनापासूनिस्तिजे॥ ऐसा

विरुद्धाएकादासमजे ॥ तथासीपृथ्वीपदाचेंसहजे ॥ काज  
 काय ॥ २८ ॥ सांडनिविषयवासना ॥ भक्तिवैराग्यकरीसा  
 धना ॥ त्यासीफावैआत्मज्ञानजाणा ॥ संतसंगतीं ॥ २९ ॥  
 श्लो० ॥ ॥ तीर्थीनितोयपूर्णानिदेवाः पाषाणमृच्छाः ॥  
 योगिनोनप्रपद्यन्तेआत्मज्ञानपरायणाः ॥ ६ ॥ ॥ दी० ॥ ॥  
 तरीतीयेविचारितांसम्यक् ॥ तेऽयेऽमवधेंचीपूर्णिदक ॥ मू  
 र्तिसंबद्देवांचेंकवतुक ॥ पाषाणआणिमृच्छयचि ॥ ३० ॥ जै  
 योगासूत्रसिद्धमुनी ॥ तेऽसियातेंनधरितीमनीं ॥ जैआ  
 त्मज्ञानपरायणी ॥ उपलब्धिसुक्त ॥ ३१ ॥ ॥ श्लो० ॥ ॥  
 अग्निदेवोह्निजातीनांयोगिनांहृदिसंस्थितः ॥ प्रतिभास  
 त्यबुद्धीनांसर्वभविदितात्मनाम् ॥ ७ ॥ ॥ दी० ॥ ॥ अ

मिदेवोहि जांसी ॥ हृदयों वरु जानयोगियांसी ॥ मनिमा  
स्तत्पुरुषीचियानरांसी ॥ ज्ञानियांसी तंवज्ञात्याची ॥ ३२ ॥  
श्लो० ॥ सर्वभ्रावस्थितंशांतं न पश्यतिजनाद्यन्म् ॥ शा-  
नचक्षर्विहीनत्वादंधः सूर्यमिवोदितम् ॥ ८ ॥ ॥ दी० ॥  
सर्वभ्रस्तरूपशांतस्थिती ॥ परीज्ञानचक्षुकस्तजनाद्य-  
नोऽवरवती ॥ सूर्यप्रकाशातेऽधनेणती ॥ जयापरी ॥ ३३  
तयापरीज्ञान ॥ वर्ततीज्ञानहीन ॥ जरीशांतअत्करण  
॥ नरीसूरुचिते ॥ ३४ ॥ अवणमनन्ननिदिस्यास ॥ जंबना-  
हींज्ञानास्यास ॥ तंवकेंचासोरस ॥ ब्रह्मज्ञानीं ॥ ३५ ॥  
श्लोक ॥ ॥ ज्ञानीपश्यतिदेहेषु निर्भलंगगनोपम्भ ॥ य  
श्यथमनोयावितन्नन्नपरंपदम् ॥ ९ ॥ ॥ दीका ॥ ॥

पूर्णज्ञानीदेहींदेवोदेवती ॥ जैसीनिर्मलगगनालती ॥  
 त्यांचियामनाचीहिंडतीगती ॥ तेथेंतेथेंपरमपद ॥ ३६ ॥  
 श्लोक ॥ ॥ तत्रतत्त्वपरब्रह्मसर्वरूपमिदंस्थितम् ॥ हृ-  
 श्यतेहश्चरूपेणगगनादधिनिर्मलम् ॥ १० ॥ ॥ दी०  
 ॥ अगाजेथेजेथेमनहिंडे ॥ तेथेंतेथेंपरब्रह्मफुडे ॥ दे-  
 हरूपाचेनिस्तरवाडे ॥ विदेहेसा ॥ ३७ ॥ रसनेचेनि  
 रसरूपे ॥ ग्राणाचेनिगंधरूपे ॥ शब्दाचेनिअंतरदोपे  
 ॥ निमालेनिराब्दे ॥ ३८ ॥ गगनगाक्षिलियाजैसे ॥ नि-  
 र्मलहोयसैसे ॥ मनापैलीकडेतैसे ॥ असुभवीथे  
 ती ॥ ३९ ॥ जेयोगीपूर्णहोती ॥ तयांचीऐसीस्थिती ॥ तेपूर्ण  
 ब्रह्मदेवती ॥ सर्वब्रजर्गां ॥ ४० ॥ ॥ श्लोक ॥ ॥ अहंब-

सोनियः सर्वविजाना तेन रः सदा ॥ हत्वा पिसइ मांहु का-  
न् सर्वशः सर्वथा हुती ॥ ११ ॥ ॥ दी० ॥ ॥ मीष सजा-  
णि तलें जेणे ॥ इंद्रियां विषयां मना सहित होणे ॥ सर्वले-  
के सीधिगुणे ॥ निरंजन अवघे ॥ ४१ ॥ भांगा रहोय सोने-  
निरबद्ध ॥ तरु बरसां उवेबोर्जी सकल ॥ तैसं साकार आ-  
टनियां केवल ॥ विश्वाकारे वस्तु चिह्ने ॥ ४२ ॥ नाना विहु-  
तीं चियाराशी ॥ याभात लिया नात लिया सुसेसी ॥ बर्त-  
तीचतुर्थपदार्थेसी ॥ परब्रह्म चिहोय ॥ ४३ ॥ ऐसं ज्ञान  
जाया सीफावे ॥ तो विदेह चीजा है स्वमावे ॥ आतों काय  
सांडा खें भांडा वे ॥ सर्वसाक्षी जाला ॥ ४४ ॥ ॥ श्लोक ॥  
अहमेवा दारं ब्रह्म परमं विष्णु चाव्ययम् ॥ हृष्यते तु यदा

कारंतदाकारं विचिन्तयेत् ॥ १२ ॥ ॥ दीका ॥ ॥ जें ब्रह्मतें मी  
 एकाक्षर ॥ जें अविनश्य पदविष्णुसार ॥ तें जाणवेशहू  
 ३५ कार ॥ सर्वसाक्षी ॥ ४५ ॥ तरीदोंपद्मांचीविषमसंधि  
 ॥ मायाहश्य ब्रह्मांचीमध्यविदी ॥ जेयेंदोंभ्रह्मरांचीअ-  
 वधी ॥ युरेम्हणे ॥ ४६ ॥ तें स्वयंज्योतिभ्रह्म अरबंड ॥ जें  
 हृदयीं बाणे प्रचंड ॥ निवांतनिर्देषउदंड ॥ जेयें पारावार  
 नहीं ॥ ४७ ॥ तें योगियांचें चिंतन ॥ तेयें बंधमोक्षसाले  
 लीन ॥ वाचासहित निवर्तलें मन ॥ तदाकार होउनी ॥ ४८  
 जें परिमूर्ण असे ॥ म्हणसी तें जाणवें कैसे ॥ तरीज्ञान सू-  
 र्य प्रकाशे ॥ तैं चिदिसे ॥ ४९ ॥ तें ब्रह्म एकाक्षर ॥ चिंतावे-  
 म्हणसी कैसे किर ॥ तरीहोउनी तदाकार ॥ चिंतावेगा ॥ ५०

जे बीं गंगा पावे सागर ॥ मगते हो यतदाकार ॥ तैसा हो यथा  
कार ॥ अचिंत्य चिंतनाचा ॥ ५१ ॥ ॥ श्लोक ॥ ॥ आत्म-  
मध्ये ह गाकारं ह इश्वर्ये चात्मस्तपकम् ॥ ह शयते तु रवगाका  
रं तदाकारं विचिंतयेत् ॥ १३ ॥ ॥ रीका ॥ ॥ अगानि हीं  
लोकां सी आवरण ॥ दुर्गाकार हैं गगन ॥ तीन्हीं लोक संपूर्ण  
॥ आकाशा मध्ये ॥ ५२ ॥ आणि निहीं लोकां मध्ये अ  
काश ॥ घरीं मठीं बहु बस ॥ एवं परस्य रेसो रस ॥ सिद्धि  
असे ॥ ५३ ॥ जैसे जला मध्ये कल्पे ल ॥ कल्पो ला मध्ये अ  
से जल ॥ ते विंदे हीं आत्मा निर्मल ॥ आत्मा या भाजीं दिह ॥  
५४ ॥ चारों देह दुर्गरबाणी ॥ यां सी बर्ली आत्मस्थानीं ॥  
आणि आत्मा असे व्यापुनी ॥ चहं रवाणी ते ॥ ५५ ॥ आ-

तांयेयेजेचिंतन॥ तेंएवंस्तुपजाण॥ जैसमराभरीतपरि  
 पूर्ण॥ संचलेंदिसे॥ ५६॥ ॥ श्लोक॥ ॥ सकलंनिष्क  
 लंस्तूद्यमंमोक्षारेणनिर्भितम्॥ अपवर्गश्चनिर्वाणंपर-  
 मंविष्णुपव्ययम्॥ १४॥ ॥ दीका॥ ॥ सकलंनिष्क  
 लजेस्तूद्यम्॥ जैमोक्षाचेंपरमधाम॥ तेंमोक्षारनिःसी  
 म॥ निर्माणहोय॥ ५७॥ तेंअव्ययविष्णुपद॥ परम-  
 मोक्षनिर्वाणसिद्ध॥ तेंहोयउपलब्ध॥ गुरुसेवनें॥ ५८  
 संकल्पविकल्पबंधाचेंकारण॥ जरीतोडीओगुरुभाष-  
 ण॥ तरीमोक्षाचेंशोचन॥ चलगेकांहीं॥ ५९॥ सकलं  
 सनाबंधतुदे॥ याचिनांवमोक्षभेदे॥ विष्णुपदनेदे॥ अ-  
 द्युपगातें॥ ६०॥ ॥ श्लोक॥ ॥ सर्वंज्योतिरात्माहंस-

द्वैमूलगुणान्वितः ॥ सर्वनपरमात्माहं ब्रह्माहं परमात्मा  
म् ॥ १५ ॥ ॥ दीक्षा ॥ ॥ सूर्यप्रकाशो वीरेशा ॥ सर्वन  
कुचीजैसा ॥ आत्मप्रकाशकाण्डेसा ॥ सर्वनएकु ॥ ६१  
॥ सर्वमूलेन्द्रेशी ॥ वर्ततां जरीदेवसी ॥ तरी आत्मा  
वीणात्यांसी ॥ चलणाहीं ॥ ६२ ॥ ऐसेद्वैशार्णीवीरेस  
मा ॥ तेसर्वनदेवतोपरमात्मा ॥ आणि अहं ब्रह्मास्मि  
हाभिष्या ॥ पावलेपरम ॥ ६३ ॥ तेचिजाणावेभक्त ॥  
ब्रह्मेन्द्रेशीत्यासाक्षात्कार ॥ जेवीं नदीनदण्डिलतां सागर  
॥ अद्वयहोय ॥ ६४ ॥ ॥ श्लोक ॥ ॥ निमिषं निमि-  
षार्थं च यन्ति इष्टं तियोगिनः ॥ तन्त्रतन्त्रकुरुक्षेमं यथागं  
नेमिषं वनम् ॥ १६ ॥ ॥ दीक्षा ॥ ॥ अर्जुनाभद्रयजे

योगी॥ तेजेयेंद्रवत्तीनिमिषार्घजगी॥ तेयेंतयापार्श्वी  
 चांगी॥ कुरुक्षेन्नासे॥ ६५॥ तयांसीपत्रपुष्पफल ॥  
 अर्पिजेजरीकेवल ॥ तरीकुरुक्षेनाहुनिअधिकफल ॥  
 सहस्रगुणंपाविजे॥ ६६॥ महणसीहंकेसंघडे॥ तरी  
 यदयैरेकफुडे ॥ कुरुक्षेन्नफेडीसाकडे ॥ कामनचे ॥  
 ६७॥ महवर्णदानप्रहणींदीजे॥ तरीएकादेशाचेराज्य  
 पाविजे॥ येवटेनिउतराईहोइजे॥ कुरुक्षेन्ने ॥ ६८॥ सा  
 धूसीअल्पभजिजे॥ तरीमोक्षदृष्ट्यापाविजे॥ ग्रैलो  
 क्याचेराज्यसहजे ॥ रेवणेंतेये ॥ ६९॥ महणसीप्रया-  
 गींमाधस्त्रान ॥ करितांहोतसेषुण्य ॥ तरीतेसाधकभ-  
 जनीजाण ॥ निमिषमाखेंहोय ॥ ७०॥ नैमिषारण्योंस-

नकादिक ॥ कृष्णकर्मकरितीभवुक ॥ तयाचेसन्निधींकर्म  
सम्यक् ॥ आजन्यआचरिजे ॥ ७१ ॥ तयाकर्मचेपद्ध ॥  
जेंआत्मज्ञानकेषब्द ॥ तेंसाधुप्रसादेनिर्मल ॥ क्षणभावें  
होय ॥ ७२ ॥ एवंनिमिषनिमिषाचेऽर्थ ॥ साधुसंगतीष  
डेशद्दु ॥ तरीसकलहीकार्यसिद्ध ॥ होयतेण ॥ ७३ ॥  
श्लो० ॥ सर्वंनिषिद्धंहृत्यापिकर्मप्रिन्सबध्यते ॥ नि  
मिषनिमिषार्थवायोगीहृत्यात्मचिंतकः ॥ १७ ॥ दी०  
॥ अंतःकरणेंजोऐसाहोय ॥ मिन्नारिसुरवदुःरवसमान-  
चिपाहे ॥ शुभाशुभमानापमानोंसमानत्वेंचिहोय ॥ नि-  
दास्तुतिसाररवीचि ॥ ७४ ॥ प्रपञ्चसर्वहीनिषेद्युनी ॥ शु-  
द्धअत्मानिवद्यनी ॥ वेगल्लाकर्मबंधनापासूनी ॥ दीप

जैसा ॥ ७५ ॥ निमिषनिमिषाचेंगर्ध ॥ योगीआत्मचिन्तनी  
 जरीहोयसावध ॥ तरीसंसारपाशहोतीदग्ध ॥ क्षणमाने  
 ॥ ७६ ॥ ॥ श्लोक ॥ ॥ क्रतुकोटिसहस्रेष्ठोध्यानसेके  
 विशिष्यते ॥ ब्रह्मज्ञानानित्यंदद्यतेपुण्यपातकं ॥  
 ७८ ॥ ॥ लीका ॥ ॥ सहस्रजन्मांच्याकोटी ॥ ज्यांसी  
 पातकेंघडलींसोरीं ॥ तींध्यानेंएकेंकिरीटी ॥ नाशातेंपा  
 वती ॥ ७७ ॥ मगाप्रत्यहींअरबंडजोध्यानस्थ ॥ ब्रह्माभि  
 चेतवीनित्य ॥ पापसुण्यकरीमस्मभूत ॥ क्षणमाने  
 ७८ ॥ हेऽपूर्वकायस्थिति ॥ जेधेंक्षणमानेंपाएंदग्धहो-  
 ती ॥ तथाध्यानाचीगति ॥ कायसांगृ ॥ ७९ ॥ ॥ श्लोक  
 ॥ मिभामिभंसरबंडःरबंडस्त्रामिश्वरस्त्रामिभ ॥ एवंमा

नापमापं चतुर्था निंदात्मसंस्कृतिः ॥ १९ ॥ ॥ टीका ॥ ॥  
पार्थी अंतः करणे जो ऐसा होय ॥ मिथा रिस्त रवदुः रव समा-  
न त्वें पाहे ॥ इष्टा निष्टश्नमाश्नमसाहे ॥ माना पमान सारि-  
र रवेची ॥ २० ॥ निंदाभाणि स्तुति ॥ हें कां हीं न संचिनीं ॥ तो-  
चिजाण महामति ॥ ज्ञानियागा ॥ २१ ॥ ऐसा मन मुक्त जो  
योगी ॥ तो चिधन्यगा धेजगी ॥ तु सधे याबोल चीधगी ॥  
न साहे आत्मा ॥ २२ ॥ एक शब्दे चिन्ह ल्य बोलती ॥ परी इन्द्रा-  
ले यणाची नाहीं स्थिति ॥ ऐसिया च्याबोले झकती ॥ तेमें  
दमतीगा ॥ २३ ॥ ॥ श्लोक ॥ ॥ भिक्षान्देह रक्षार्थ  
वरुन्न लज्जा निवारणम् ॥ अरमानं च हि रण्यं च शाकं शा-  
ल्योदनं तथा ॥ २० ॥ ॥ टीका ॥ ॥ भिक्षान्दभक्षिजे ॥

देहरक्षणापुरतेंसेविजे ॥ जेणोंकाळेंजैसेंपाविजे ॥ तैसें-  
 चिघ्यावें ॥ ८४ ॥ अलापालाकोरडाओला ॥ हिरवाकां  
 शिजला ॥ जेणोंकाळेंजोप्राप्तज्ञाला ॥ तोचिसेविजे ॥ ८५  
 ॥ जरीदैवगत्यामिश्रान्न ॥ मिल्लेषहुसपकान्न ॥ तरीतें  
 हीकाळेंकरूपमक्षीन्न ॥ आप्रहेबीण ॥ ८६ ॥ एवंदेह  
 रक्षणार्थऐसें ॥ अन्नमस्तिजेअनायासें ॥ परीआस्था  
 नधरीमानसें ॥ आप्रहाची ॥ ८७ ॥ तैसेंवरम्भलज्जानि-  
 चारण ॥ आणिहिरण्यद्रव्यजेसंपूर्ण ॥ तयासीस्तुणे  
 पाषाण ॥ निचाडऐसा ॥ ८८ ॥ ॥ श्लोक ॥ ॥ समानं  
 चिंतयेद्योगीयदिचिंतामपेक्षते ॥ करस्यन्तरस्यकेवल्यंपुन-  
 जन्मनाविद्यन्ते ॥ २९ ॥ ॥ लीका ॥ अन्नवरम्भन ॥ जया-

सोनृणासमान ॥ देहासहितउदासीन ॥ आत्मनिष्टुजो  
॥ ९९ ॥ तोदेरबेपूर्णचेतन्य ॥ जेथेंपारुषलेंचिंतन ॥ तोचि  
ज्ञानियांधन्य ॥ जोलीनभाइयागार्डी ॥ १० ॥ ऐसेंज्याचे  
हातींकेवल्य ॥ त्यासीकेंचुनज्ञाचेंखबळ ॥ तयासं-  
शयोनाहींकेवळ ॥ मीतेंतोजाहला ॥ ११ ॥ तयासीकव-  
ण्याभर्थाची ॥ चिंताभसेलकासयाची ॥ तोभ्रशयगा  
सव्यसाची ॥ ऐसेंजाण ॥ १२ ॥ ॥ श्लोक ॥ ॥ भिक्षा-  
हारीनिराहारी भिक्षानैव प्रतिग्रहः ॥ असंतोवापि सं-  
तोवासोमपानं दिने दिने ॥ २२ ॥ ॥ री० ॥ ॥ जोप्राणी  
भिक्षाहारी ॥ तोजाणनिराहारी ॥ तेथेंप्रतिग्रहाचीप  
री ॥ सर्वथानाही ॥ १३ ॥ आहेनाही आठवणसंरली ॥ आ-

ण अहंतासप्तानिधोनिगेली ॥ त्यासीपतिरिनींबोर्नीं  
 बोगारिलीं ॥ असृताचीं ॥ ९४ ॥ ॥ श्लोक ॥ ॥ शतच्छिद्रा-  
 वरीकंथाशीताशीतनिवारणम् ॥ अचलकेशवेषक्तिर्विभ-  
 वैः किंप्रयोजनम् ॥ २३ ॥ ॥ लीका ॥ ॥ शतच्छिद्रांचींफा-  
 टकीं ॥ तींवस्त्रंम्हणतोनेटकीं ॥ त्यांचीकंथाकरीएकी ॥ प्रा-  
 वरणालगीं ॥ ९५ ॥ शीतकाळींशीतनिवारण ॥ उघ्णाका-  
 ळींउघ्णानिवारण ॥ शुंगाराचेंप्रयोजन ॥ तेंअसेचिना ॥ ९६  
 देवारुस्त्रीमक्तिअचल ॥ हाचिनिजाचारुनिर्मल ॥ वैषम्या-  
 चेंकायडोळ ॥ प्रयोजननाहीं ॥ ९७ ॥ इहीलक्षणींअ-  
 लंकूत ॥ तोचिजापावासहंस ॥ तथाचियेडायींअद्वृत  
 ॥ वैरावत्यज्ञान ॥ ९८ ॥ ॥ श्लोक ॥ ॥ कुसौनिष्ठतिय-

स्यान्तंयोगास्यासेनजीर्णते ॥ कुलांस्तारथतेषांदश  
पूर्वन्दशापरात् ॥ २४ ॥ ॥ टीका ॥ ॥ गृहस्थाचियाआ  
श्रमीसुनी ॥ जेवीकुशीपोटभरूनी ॥ तेऽन्त्योगास्या  
सेंकरूनी ॥ भस्मकरी ॥ ९९ ॥ तरीगृहस्थाचीकुळेंवीस  
॥ दहापूर्वेलिअषेष ॥ दहाअपरनिः शेष ॥ तरीजाण ॥  
१०० ॥ आपलींतीबेताळीसपूर्वापार ॥ तैसींचतारूनिसा  
लास्थिर ॥ जेंरिघालाघर ॥ श्रीगुरुचें ॥ १ ॥ ॥ श्लोक  
॥ यनिहस्तेजलंदधादेसंदधात्सुनर्जलं ॥ तदन्तंसेर-  
णा तुल्यंतजलंसागरोपमम् ॥ २५ ॥ ॥ टीका ॥ ॥ यो  
गेशबरधरासीआले ॥ तयांसीसचानेपूजिलें ॥ तरीअमि-  
तफलभसेबोलिलें ॥ गृहस्थासी ॥ २ ॥ प्रथमहस्तोदक

सुन्नेहुताशनः सर्वगतं विभक्षेत् ॥ तथैव योगी विषयान्म  
 सुन्नेन लिप्यते कर्मशुभाशुभं च ॥ २८ ॥ ॥ टी० ॥ ॥ जैसा  
 रविभवनि छावशें ॥ सर्वहीरसशो रिवत असे ॥ परीतो ते-  
 थें लिप्तनसे ॥ सर्वथाजाण ॥ १३ ॥ अथवा हुताशन वजांतरी  
 ॥ पेटलियानिधीरीं ॥ ओलेकोरडेबरेओरवटेभस्मकरी ॥ अ-  
 निष्ठें कर्त्तव्यी ॥ १४ ॥ तैसायोगे शब्द इच्छारहित ॥ शब्दादि  
 विषयासोगित ॥ परीशुभाशुभमकर्मांभलिप्त ॥ स्वरूपावशो  
 धें ॥ १५ ॥ ॥ श्लो० ॥ ॥ ध्यानेन योगारणिमंथनेन पंचात्म-  
 कं कर्मणुणेऽधनेन ॥ ज्ञानाग्निनावायुस सुचितेन दग्धं सुगां  
 तं सह कर्मविधैः ॥ २९ ॥ ॥ टी० ॥ ॥ वामदक्षिणसंयोगें ॥  
 योगारणीचेनिप्रसंगें ॥ ज्ञानाग्निचेत्तद्वनिवेगें ॥ प्रदीपक-

री ॥ १६ ॥ तेऽयं पंचमहासूत्रे ॥ तत्कर्मधर्मगुणसहिते ॥ सुगा-  
दोचियां कर्मबंधाते ॥ भस्मकरीजानामिवासु ॥ १७ ॥ हकार  
सकारमध्यने ॥ योगामिप्रज्ञलेतेणे ॥ सकलसुगबंधने ॥ द  
ग्धहोती ॥ १८ ॥ ॥ ३८ ॥ ॥ श्राव्यमेदं न जानाति तस्य मु  
क्तिर्जायते ॥ समानं सर्वजन्तूनां ब्रह्मसूत्रं हिकथ्यते ॥ ३० ॥  
टी० ॥ जो हाब्रह्ममावोनेणती ॥ जे अज्ञानहोडनिर-  
कती ॥ तेकेवीं पावती ॥ मोद्यपदा ॥ १९ ॥ जें सर्वसूत्रीं समान  
॥ परब्रह्मनिर्गुण ॥ सूत्ररूपें जाण ॥ व्यापुनी असे ॥ २० ॥ जे-  
सामणीचेतायीं नितु ॥ तें सासर्वसूत्रीं अनंतु ॥ सबाई अ-  
स्थितरीं स्थितु ॥ निजानं दु ॥ २१ ॥ हें ब्रह्मसूत्रीं उपनिषदों ॥  
निरोपिलें असे अनादि ॥ हें नेणो तो निशाहि ॥ अज्ञानगा ॥

२२॥ ॥श्लो०॥ ॥उर्ध्वंतुनिमाकरं ब्रह्मसूभनिमाकति  
 ॥श्लचितनिर्मलं शांतं निश्चितं चित्तवर्जितम् ॥३१॥ ॥टी०  
 ॥जैसी उर्ध्वनाभितं लाघारें ॥ सहजरबालतो उतरे ॥ मारुनो  
 या सूनिनिर्धारें ॥ स्वस्थानासिये ॥ २३॥ तैसं ब्रह्मसूभजा-  
 या सूनी ॥ प्रपंचाभासया सूनी ॥ रुचितराहे स्वस्थानी ॥ स्व-  
 यं बोधें ॥ २४॥ निर्मलनिजानंदेन्मरित ॥ जैं पूर्णनिंदेशांत  
 निश्चित ॥ विश्वाकरें अमेदहृत ॥ तेजाणविअजुना ॥ २५  
 ॥ श्लोक ॥ ॥ सर्वचिंताविनिर्मुक्तं निश्चितं विमलं भवेत् ॥  
 सर्योगी ब्रह्मनिर्वाणं लभतेनाभसंशयः ॥ ३२॥ ॥टी०॥  
 जो पूर्णज्ञानी निश्चित ॥ तो सर्वचिंताविनिर्मुक्त ॥ तो चिगा  
 निर्मलशांत ॥ ऐसेजाण ॥ २६॥ तो चिगा सर्योगी धन्य ॥ त-

यासीक्षावलेंश्रव्यनिर्बाण ॥ येथेंसंशायोनाहोंजाण ॥ अ-  
नुभवसुक्ति ॥ २७ ॥ परिपूर्णभाग्यगुरुहपा ॥ जरीलहे  
पूर्णबापा ॥ तरीहाअनुभवुसोपा ॥ होउनिफावे ॥ २८ ॥  
ऐसाहाश्रीरुद्धार्जुनसंबादु ॥ अश्वसेधपवींचास्वानंद  
॥ जोसंस्कृतोंसंबादु ॥ बोलिलेदोषे ॥ २९ ॥ हेवेदांतींचेस  
र ॥ उपनिषदांचेगळर ॥ व्यासोक्तिपूर्णनिर्भर ॥ मालास-  
नुहा ॥ ३० ॥ हेउत्तरगीतापवित्र ॥ ऐकिलियाउछुरेजगत्र  
॥ केलीटीकासंक्षेपमात्र ॥ यथालागीं ॥ ३१ ॥ श्रीगुरुचेनि  
प्रसादें ॥ संतसंपक्तचेनिबोधे ॥ संकृतींचीव्यारव्यानपदें  
॥ मराठीकेलीं ॥ ३२ ॥ आतांसंतमहंतांविनवणी ॥ हेम-  
हाटीअरुषवाणी ॥ मान्यकरावीइहींवचनीं ॥ श्लोकार्थ

भावें ॥ ३३ ॥ परीअधिकनबोलवेहोजी ॥ यासंस्कृताहुर्मि  
 सहजी ॥ आणिएकअक्षरजाउनेदीऐजी ॥ यथासंस्कृ  
 ताचें ॥ ३४ ॥ श्रीनिवृत्तिनाथकृपाबोधे ॥ तुल्यासर्वज्ञाचे-  
 नियसादें ॥ उत्तरगीतास्वानंदें ॥ श्लोकार्थकेला ॥ ३५ ॥  
 तेप्रीतिपाबोचकधरा ॥ श्रीरुक्मादेवीचियावरा ॥ श्रोते  
 जनआवधारा ॥ विनवणीसाज्जी ॥ ३६ ॥ जेगातीऐकती  
 अध्यात्मयोगु ॥ तयागुरुभक्तांचाफिलेयांगु ॥ तरीक्षान  
 होयचांगु ॥ आणिस्वरूपींमिजे ॥ ३७ ॥ उत्तरगीतेसी  
 प्रवाहो ॥ येथेंजोमनेंकरीभावो ॥ तोजीवन्मुक्तम्हणेजा  
 नदेवो ॥ निवृत्तिदास्त् ॥ १३८ ॥ ॥ ॐतत्सदितिश्रीस्मद्भु-  
 न्नरगीतास्तूपनिषत्सुब्रह्मविद्यायांयोगशास्त्रेश्रीरुद्र्या-

र्जुनसंवादेऽपश्वमेधपर्वणिमहाभारतेउत्तरगीतायांशा-  
नदेवकृतीकायांभोक्षयोगोनाभ्यत्वतीयोध्यायः ॥ ३ ॥

श्रीलघ्नार्पणमस्तु ॥ ॥ श्रामंभवतु ॥ ॥ ४ ॥ ॥ ५ ॥

हेंपुस्तकपुणेपेरशनवारमेहुणपुरायेयेंरावजीश्रीधर  
गोंधब्लेकरयांर्णीआपलेजगद्वितेच्छु छापरवान्यांतजा  
पिलें ॥ नारीरव६ जुलई सन् १९८९ इ० ॥ ॥ आ०२

॥ इति उत्तरगीतासमाप्ता ॥